SAMPLE

MindSutra Software Technologies

A-16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar,

Uttam Nagar, New Delhi-110059

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

Disclaimer

1. Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the kundali and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, asoociations, strengths, weknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

2. Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgement. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence. "PARASHAR SANJIVANI" is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you recieve should not be used as a substitue for advice, programs, or treatment that you would normally recieve from a licensed proffesional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or finacial advisor.

3. The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per the ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither "PARASHAR SANJIVANI" can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated results.

4. "PARASHAR SANJIVANI" makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

5. "PARASHAR SANJIVANI" ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. "PARASHAR SANJIVANI" further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in the horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for refrencing purpose if you may need to consult in future.

6. Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to "PARASHAR SANJIVANI" and "PARASHAR SANJIVANI" shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event wil "PARASHAR SANJIVANI" be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

7. "PARASHAR SANJIVANI" reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, ww.webjyotishi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.

MindSutra Software Technologies
A-16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar,
Uttam Nagar, New Delhi-110059

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

जन्म दिनाकं	18:12:1973(मंगलवार)
जन्म समय	01:45:00
जन्म स्थान	new delhi
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00
जी. एम. टी. समय	020:15:00
स्थानीय समय	001:23:48 hrs
सांपातिक काल	007:09:02 hrs
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:11
अयनांश	N.C.Lahiri(023:29:36)
सूर्योदय	07:11:19AM
सूर्यास्त	05:24:35PM
विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
संवत्सर अधिपति	इन्द्राग्नि

घात चक्र

राशि (सूर्य)	कुम्भ
मास	फाल्गुन
तिथि	5,10,15
वार	शुक्रवार
नक्षत्र	अश्लेषा
प्रहर	4
लग्न	सिहं
सूर्य सिद्धान्त योग	वज्र
करण	चतुश्पद

अवकहड़ा चक्र

लग्न	कन्या
लग्नाधिपति	बुध
राशि (चन्द्रमा)	कन्या
राशिपति	बुध
नक्षत्र	हस्ता
नक्षत्रपति	चन्द्रमा
नक्षत्र चरण	2
ऋतु	बसन्त
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	नवमी
तिथि श्रेणी	रिक्ता
तिथि पति	सूर्य
करण	गरिज
करण श्रेणी	चर
करणपति	वासुदेव
गण	देव
योनि	हस्त (स्त्री)
वर्ण	वैश्य
सूर्य सिद्धान्त योग	सौभाग्य
रज्जु	कंठ
वश्य	द्विपद
तत्व	अग्नि
विहग	वायस
तत्वाधिपति	मंगल
नाड़ी	आदि
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	Shaa
पाया	स्वर्ण

ग्रह स्थिती

लग्न कुण्डली

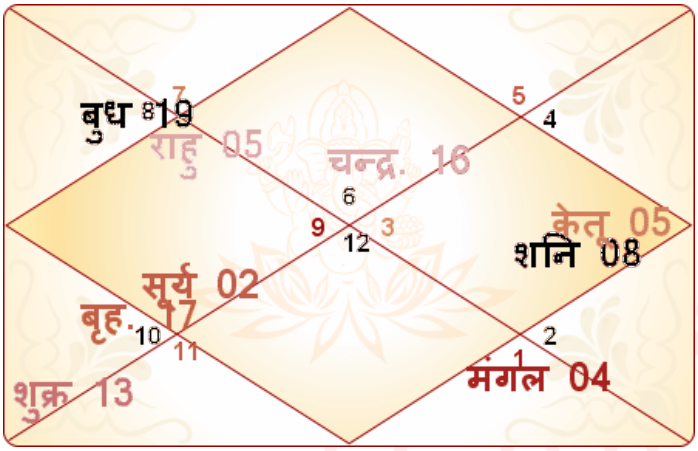

नवांमश कुण्डली

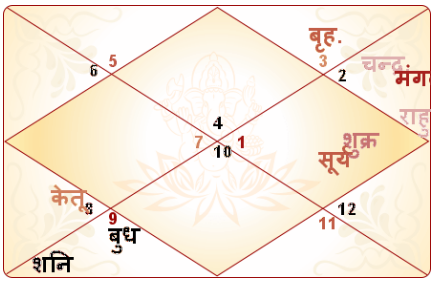

चन्द्र कुण्डली

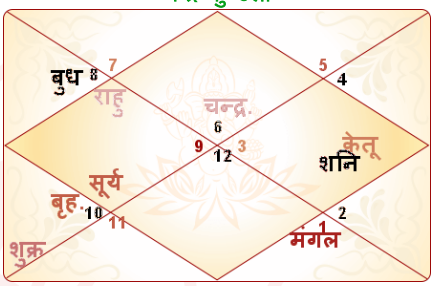

ग्रह स्थिती

ग्रह	राशि	अंश	गति	रा. पति	नक्षत्र	च.	न	न. पति	नवांश	नव. पति	विशेष
लग्न	कन्या	21:41:42	...	बुध	हस्ता	4	13	चन्द्रमा	कक्र	चन्द्रमा	
सूर्य	धनु	02:15:49	01:01:04	बृहस्पति	मूला	1	19	केतु	मेष	मंगल	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	13:01:33	बुध	हस्ता	2	13	चन्द्रमा	वृष	शुक्र	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:42:17	00:14:54	मंगल	अश्विनी	2	1	केतु	वृष	शुक्र	स्व राशि
बुध (ग्र.)	वृश्चिक	19:51:24	01:31:14	मंगल	ज्येष्ठा	1	18	बुध	धनु	बृहस्पति	स्व नक्षत्र
बृहस्पति	मकर	17:56:39	00:12:02	शनि	श्रवण	3	22	चन्द्रमा	मिथुन	बुध	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:00:16	00:32:45	शनि	श्रवण	1	22	चन्द्रमा	मेष	मंगल	मित्र राशि
शनि (व.)	मिथुन	08:12:33	00:04:55	बुध	अरिद्रा	1	6	राहु	धनु	बृहस्पति	मित्र राशि
राहु (व.)	धनु	05:10:35	00:03:10	बृहस्पति	मूला	2	19	केतु	वृष	शुक्र	सम राशि
केतु (व.)	मिथुन	05:10:35	00:03:10	बुध	मृगशिर	4	5	मंगल	वृश्चिक	मंगल	सम राशि
हर्षल	तुला	03:20:59	00:02:22	शुक्र	चित्रा	4	14	मंगल	वृश्चिक	मंगल	...
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:40	00:02:10	मंगल	अनुराधा	4	17	शनि	वृश्चिक	मंगल	...
प्लूटो	कन्या	13:11:14	00:00:46	बुध	हस्ता	1	13	चन्द्रमा	मेष	मंगल	...

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	..	71	354	193	58	116	111	257	73	253	12	53	351
सूर्य	289	..	284	122	348	46	41	186	3	183	301	342	281
चन्द्रमा	6	76	..	199	64	122	117	262	79	259	17	58	357
मंगल	167	238	161	..	225	283	278	64	240	60	179	220	158
बुध	302	12	296	135	..	58	53	198	15	195	313	354	293
बृहस्पति	244	314	238	77	302	..	355	140	317	137	255	296	235
शुक्र	249	319	243	82	307	5	..	145	322	142	260	301	240
शनि	103	174	98	296	162	220	215	..	177	357	115	156	95
राहु	287	357	281	120	345	43	38	183	..	180	298	339	278
केतु	107	177	101	300	165	223	218	3	180	..	118	159	98
हर्षल	348	59	343	181	47	105	100	245	62	242	..	41	340
नेपच्यून	307	18	302	140	6	64	59	204	21	201	319	..	299
प्लूटो	9	79	3	202	67	125	120	265	82	262	20	61	..

षोडश वर्ग कुण्डली

होरा कुण्डली

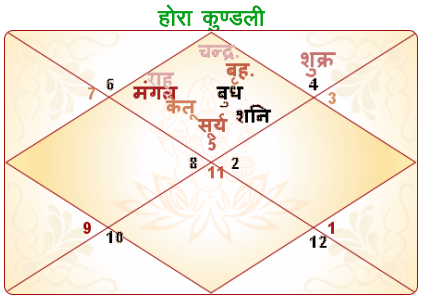

धन दौलत के लिए

द्रेष्काण कुण्डली

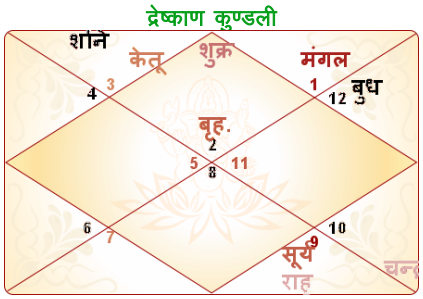

सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य

चतुर्थांश कुण्डली

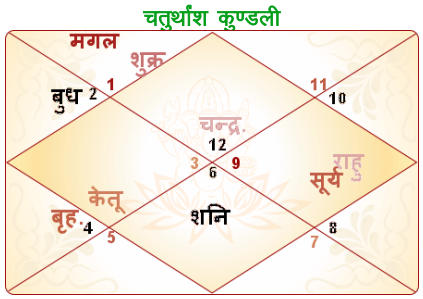

भाग्य और रिहायशी मकान

सप्तमांश कुण्डली

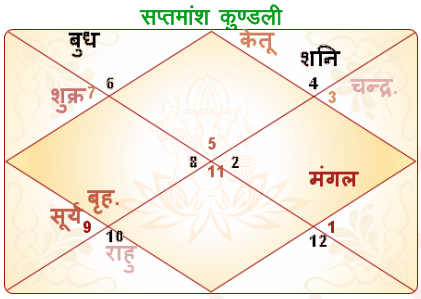

संतान और उनकी संतान

नवांश कुण्डली

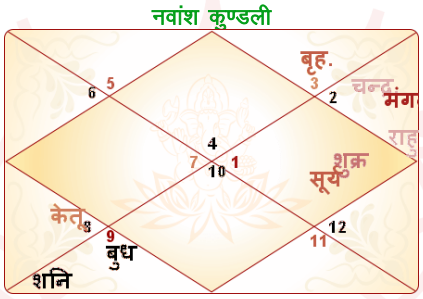

जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य

दसमांश कुण्डली

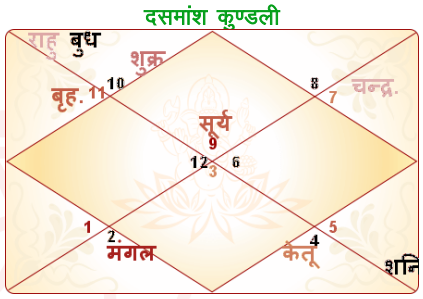

कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता

द्वादशांश कुण्डली

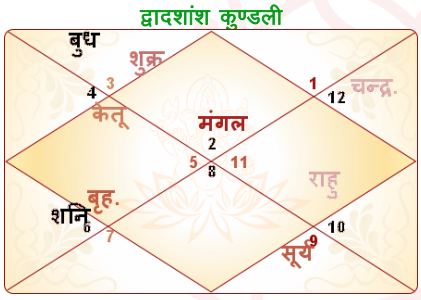

माता पिता का जीवन और उनका स्वास्थ्य

षोडशांश कुण्डली

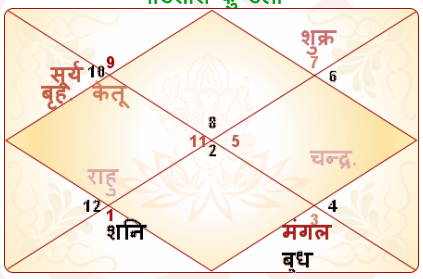

वाहन से संबंधित बातें

विशांश कुण्डली

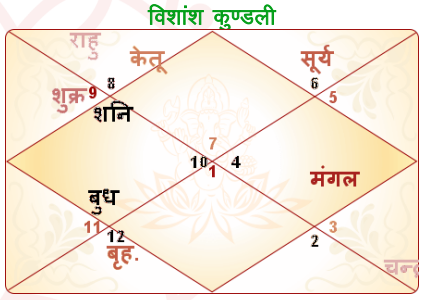

आध्यात्मिक रूझान

चर्तुविशांश कुण्डली

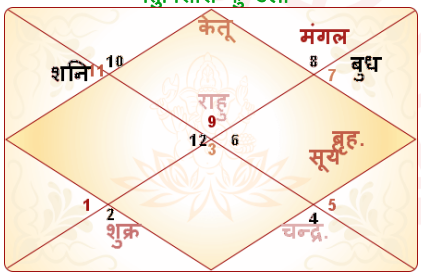

शिक्षा, ज्ञान और समझ

सप्तविशांश कुण्डली

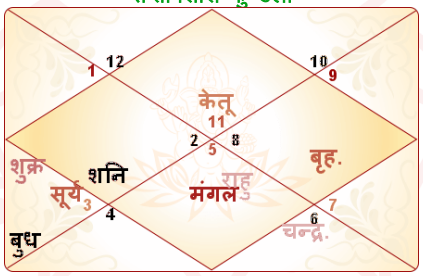

ताकत और दुर्बलता

त्रिशांश कुण्डली

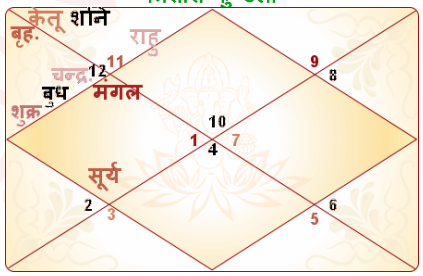

दरिद्रता, कठिनाईयाँ और दुर्गति

खवेदांश कुण्डली

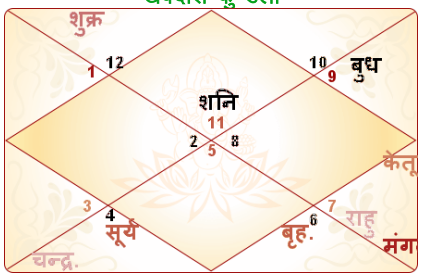

शुभ अशुभ घटनाँए

अक्षवेदांश कुण्डली

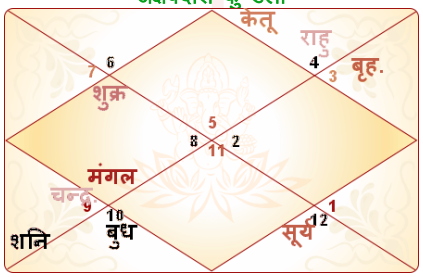

सभी मुद्दों के लिए

षष्टांश कुण्डली

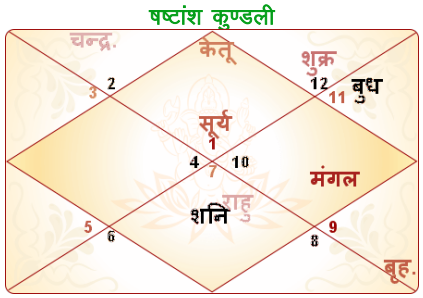

सभी मुद्दों के लिए

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (अयनाश : 023:29:36) चन्द्रमा 5.0 व.5.0 म.26 द.

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	चन्द्रमा	5.0 y.5.0 m.26 d.	18:12:1973
2	मंगल	7.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1979
3	राहु	18.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1986
4	बृहस्पति	16.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2004
5	शनि	19.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2020
6	बुध	17.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2039
7	केतु	7.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2056
8	शुक्र	20.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2063
9	सूर्य	6.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2083

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
बृहस्पति	
शनि	18:12:1973
बुध	14:04:1975
केतु	13:09:1976
शुक्र	14:04:1977
सूर्य	13:12:1978

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	14:06:1979
राहु	10:11:1979
बृहस्पति	28:11:1980
शनि	04:11:1981
बुध	13:12:1982
केतु	10:12:1983
शुक्र	08:05:1984
सूर्य	08:07:1985
चन्द्रमा	13:11:1985

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	14:06:1986
बृहस्पति	24:02:1989
शनि	20:07:1991
बुध	26:05:1994
केतु	13:12:1996
शुक्र	31:12:1997
सूर्य	31:12:2000
चन्द्रमा	25:11:2001
मंगल	26:05:2003

बृहस्पति दशा

अन्तर्दशा	से
बृहस्पति	13:06:2004
शनि	01:08:2006
बुध	12:02:2009
केतु	20:05:2011
शुक्र	25:04:2012
सूर्य	25:12:2014
चन्द्रमा	13:10:2015
मंगल	12:02:2017
राहु	19:01:2018

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	13:06:2020
बुध	17:06:2023
केतु	24:02:2026
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	16:12:2032
राहु	25:01:2034
बृहस्पति	01:12:2036

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	14:06:2039
केतु	10:11:2041
शुक्र	07:11:2042
सूर्य	07:09:2045
चन्द्रमा	14:07:2046
मंगल	13:12:2047
राहु	10:12:2048
बृहस्पति	29:06:2051
शनि	04:10:2053

केतु दशा

अन्तर्दशा	से
केतु	13:06:2056
शुक्र	10:11:2056
सूर्य	10:01:2058
चन्द्रमा	17:05:2058
मंगल	16:12:2058
राहु	14:05:2059
बृहस्पति	01:06:2060
शनि	08:05:2061
बुध	17:06:2062

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	14:06:2063
सूर्य	13:10:2066
चन्द्रमा	13:10:2067
मंगल	14:06:2069
राहु	14:08:2070
बृहस्पति	14:08:2073
शनि	13:04:2076
बुध	14:06:2079
केतु	14:04:2082

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	14:06:2083
चन्द्रमा	01:10:2083
मंगल	01:04:2084
राहु	07:08:2084
बृहस्पति	02:07:2085
शनि	20:04:2086
बुध	02:04:2087
केतु	06:02:2088
शुक्र	13:06:2088

सामान्य भविष्यफल

आपकी लग्न राशि कन्या है। इस राशि को भौतिक, सामान्य या लचीली राशि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। अन्य कई नैसर्गिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें विद्यमान हैं। यह नीरस और मानवीय प्रकृति की राशि है।

सामान्य जानकारी, मानसिक शांति, ब्यक्तित्व, अवसर और जीवन की दिशा

आप मेधावी, अध्ययनशील और विनोदपूर्ण प्रकृति के होंगे। आपके कार्य करने के तरीके बहुत नियमबद्ध और सुव्यवस्थित होंगे, आप बहुत ज्ञानी व्यक्ति होंगे– निपुणता प्राप्त करने के उद्देश्य से आप सदैव ज्ञान की खोज में लगे रहेंगे। आपका झुकाव निरन्तर अनौपचारिक अध्ययन अथवा अनुसंधान की ओर बना रहेगा, तंत्र–मंत्र और इससे संबंधित विषयों में भी आपकी रूचि हो सकती है। आपमें धैर्य व दृढ़ता का भण्डार हो सकता है।

आपके व्यक्तित्व में स्त्री गुण की प्रधानता अधिक हो सकती है। आपकी शारीरिक संरचना बहुत मजबूत नहीं हो सकती है, लेकिन दिखने में आप आकर्षक होंगे तथा स्वभाव से स्त्रियों वाले लक्षण अधिक दिख सकते हैं। आप तेज बुद्धि वाले तथा दूसरों के विचारों को सफलतापूर्वक व्यक्त करने में सक्षम होंगे। आप काम सुख के लिए आध्यात्मिक सुख का त्याग कर सकते हैं। आमतौर पर आप सम्मानित लोगों से घिरे रहना चाह सकते हैं, जो कि प्रसिद्ध लेखक, दस्तकार, वकील, राजनयिक एवं शहीद वीर जवान भी हो सकते है। आपको सारी भौतिक सुख–सुविधा प्राप्त होगी तथा देश के बाहर भी आपको सम्मान मिलेगा। आप बहुत जल्द निराश हो सकते हैं तथा अपनी भावुक प्रवृति के कारण मनोवैज्ञानिक समस्याओं के शिकार हो सकते हैं। आप धोखेबाज, गंभीर, जोड़–तोड़ करने वाले तथा दूसरे के धन पर अपनी नजर रखने वाले हो सकते हैं।

आपको कला और साहित्य में भी काफी रूचि हो सकती है। सामान्यतः अपने सभी मामलों में आप आदतन आलोचक और सख्त होंगे, तो भी आप कोमल वाणी, व्यावहारिक, परोपकारी और विवेकपूर्ण प्रकृति के होंगे। आप सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास रखेंगे और बहुत विवेकपूर्ण ढंग से अपने मौद्रिक मामलों का प्रबन्ध करेंगे। आप विचित्र वस्तुओं के उत्साही संग्रहकर्ता हो सकते हैं– संभवतः जिसने आपके जीवन के किसी समय के दौरान आपकी कल्पना को आकर्षित किया हो, लेकिन किसी भी संग्रहित वस्तु से अलग ना होने की आपकी एक विचित्र आदत हो सकती है।

आप गौर वर्ण के हो सकते हैं। आप मध्यम कद और गोल चेहरे व सुगठित छरहरी शारीरिक संरचना वाले हो सकते हैं। आपकी आँखें सुन्दर होंगी। आपकी आवाज कुछ–कुछ तेज हो सकती है। साथ ही आप कुछ हद तक अस्थिर मस्तिष्क वाले हो सकते हैं और बढ़ती उम्र के साथ उदास प्रवृत्ति अपना सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पहले भाव में चन्द्रमा स्थित है। आपको आमदनी की कोई कमी नहीं होगी। हालांकि इसमें उतार–चढ़ाव हो सकता है। रोजगार से संबंधित आप लंबी दूरी की कई यात्रायें करेंगे तथा बड़े–बड़े लोगों के

संपर्क में आयेंगे। आप व्यापारी के रुप में बहुत ज्यादा अनुभव एवं कौशल प्राप्त करेंगे तथा अंर्तराष्ट्रीय व्यापार में सफलता हासिल करेंगे।.एक कुशल राजनयिक के रुप में भी सफलता प्राप्त होगी। आमतौर पर आप बहुत ही शर्मिला एवं मिलनसार स्वभाव वाले होंगे तथा काल्पनिक दूरदृष्टि रखने वाले होंगे। कभी–कभी आप ऐसे दिखते हैं कि कोई दूसरा व्यक्ति आपकी सोच का अनुमान नहीं लगा सकता।

सकारात्मक गुण

आपमें विश्लेषण करने की अनोखी क्षमता विद्यमान होगी। आप बुद्धिमान और धारणशील स्मृति वाले होंगे। आप लड़ाई–झगड़ों से दूर रहने का प्रयास करेंगे और शांति व एकता आपको पसन्द होगी। आप बहुत नियमबद्ध ढंग से कार्य करेंगे। आपको कई क्षेत्रों का ज्ञान होगा। आप विवेकशील होंगे और व्यर्थ में धन खर्च नहीं करेंगे। आपको कला और संगीत में रूचि होगी।

नकारात्मक गुण

आप भ्रमित और अस्थिर दिमाग वाले हो सकते हैं। आपमें आत्म–विश्वास की कमी हो सकती है। आप यथार्थवादी नहीं हो सकते हैं और अज्ञात सपनों के पीछे भाग सकते हैं।

विशिष्ट गुण

1– आप बुद्धिजीवी और अत्यंत ग्रहणशील महिला होंगी।

2– आप कर्तव्यनिष्ठ और अपने कार्यों में बहुत व्यवस्थित होंगी। आप प्रत्येक क्षण के बारे में विचार करेंगी।

3– आप विनम्र, धार्मिक और मधुर वाणी वाली महिला होंगी।

खान–पान, स्वास्थ्य और ब्यायाम

आपको एक दिन में भारी मात्रा में तीन बार भोजन करने की बजाय, 5 या 6 बार थोड़ी–थोड़ी मात्रा में भोजन करना चाहिए। बढ़ती उम्र के साथ आपके शरीर का नीचला भाग अधिक वजनी हो सकता है। आपको प्रतिदिन टहलना या तेज कदमों से चलना चाहिए। आप अपने भोजन के साथ सदैव प्रयोग करने वाले हो सकते हैं, इसलिए आप स्थानीय खाद्य व पेय पदार्थों तथा शहर के नए भोजन को चखने में नहीं हिचकिचायेंगे। आपको उत्तम और अच्छी तरह से पका हुआ भोजन पसन्द होगा। आपमें कफ तत्व की अधिकता होगी।

आपके लिए गाजर शक्ति का खजाना है। आप इसे कच्चा या सलाद में खा सकते हैं, इसका जूस पी सकते हैं या पकाकर भी खा सकते हैं। आपकी राशि का स्वामीत्व शरीर के नीचले भाग पर है, इसलिए आपको अपने भोजन में अंडा, सोया, पनीर, साबूत अनाज, दाल, दूध आदि जैसे प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों का भी सेवन करना चाहिए, जिससे आपकी माँसपेशियां मजबूत होंगी। आपको लाल माँस और माँस आदि से भरे खाद्य पदार्थ का सेवन बहुत सीमित मात्रा में करना चाहिए। आपको फ्रिज में जमाए हुए, डिब्बे बन्द अथवा परिरक्षित खाद्य पदार्थों का भी सेवन नहीं करना चाहिए। आपके लिए ताजा भोजन करना लाभदायक होगा।

आपकी उम्र बढ़ने पर आपके शरीर के नीचले भाग का वजन बढ़ सकता है। आपको शारीरिक और मानसिक रूप से स्वच्छंद व स्वतंत्र होना पसन्द होगा। आपको घुड़सवारी, पर्वतारोहण आदि बहुत पसन्द होगा, लेकिन गांव में या देश के भीतर रहने पर इस तरह का कार्य कर पाना संभव नहीं होता है, इसलिए आपको इसके स्थान पर टहलना, दौड़ना, तेज चलना अथवा व्यायाम करना चाहिए। इससे आपका वजन कम होगा तथा आपका शरीर तन्दुरूस्त रहेगा। आपको अपने शारीरिक प्रशिक्षण व्यायाम को प्रतिदिन करना चाहिए। आपको अपने शरीर के नीचले भाग का वजन कम करने के लिए संभवतः विशेष ध्यान देना चाहिए।

धन–सम्पदा, परिवार, मान–सम्मान, भाषण कला और समाज में स्थान और सामाजिक संबंध

आप सुन्दर स्वरूप वाले होंगे। आपको अपने परिवार के साथ रहना पसन्द होगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ सहभागिता में व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। आप परिवार एवं वित्त संबंधी मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप संतुलित दृष्टिकोण वाले व्यक्ति होंगे तथा वित्तिय निर्णय लेने से पहले उसके अच्छे व बुरे दोनों पहलुओं पर अच्छी प्रकार से विचार करेंगे। आप जो धन प्राप्त करते हैं, उसके बारे में बहुत कठोर हो सकते हैं। आप काले धन से नफरत करेंगे। आप बहुत अधिक परिश्रम एवं सर्तकता के साथ कार्य करेंगे। आप दूसरों के धन एवं समृद्धि देखकर लालच में आ सकते हैं। आप बहुत ही नम्र होने की कोशिश करते हैं तथा चाहते हैं कि ईमानदार व्यक्ति के रुप में जाने जायें। आप जमीन के अंदर छुपे स्रोतों से धन हासिल कर सकते हैं। कृषि एवं खनन में लाभ प्राप्त करने की संभावना अधिक है। हालांकि आप बहुत लालची हो सकते हैं, लेकिन अपना लालच छिपाने की पूरी कोशिश कर सकते हैं। आप मिट्टी, अनाज, पत्थर या रत्नों से संबंधित व्यवसाय में संलग्न हो सकते हैं। आपकी सबसे बड़ी संतान मनोरंजन या सौन्दर्यविषयक कार्यों में संलग्न हो सकती है।

साहस और पराक्रम, शौक और रूचियाँ, भाई–बहन और पड़ोसी

आपका व्यवहार अनैतिक एवं असामाजिक हो सकता है। आपका परिवार व्यावसायिक पृष्ठभूमि वाला हो सकता है एवं इस क्षेत्र में उत्तम कार्य कर सकता है। कभी–कभी आपको अपने प्रयासों में असफलता या आघात लग सकता है। यदि आप जल से संबंधित यात्राएं करते हैं, तो आपको उससे सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आपको जल से खतरा हो सकता है। संभवतः आपको छोटी यात्राओं के दौरान गंभीर दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा आपको स्वयं के कारण ही चोट लग सकती है। आपके छोटे भाई/बहन दृढ़ निश्चयी व हठी प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा दूसरों की भावनाओं की कदर नहीं कर सकते हैं। आपका अपने छोटे सहोदरों के साथ मधुर संबंध नहीं हो सकता है तथा आप उनके साथ मिल–जुल कर नहीं रह सकते हैं। आपके छोटे सहोदर आक्रामक स्वभाव के हो सकते हैं तथा उनमें से कुछ दुर्घटना व चोट से पीड़ित हो सकते हैं। आपके माता–पिता का वैवाहिक संबंध सौहार्दपूर्ण नहीं हो सकता है। यहां तक कि प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न होने के कारण उनका परस्पर संबंध विच्छेद भी हो सकता है। आपके बड़े सहोदर सेना में उच्च अधिकारी के पद पर आसीन हो सकते हैं तथा संभवतः भगवान विष्णु के उपासक हो सकते हैं। आपकी पत्नी भवन निर्माणकर्ता के घर से हो सकती हैं। वह धन संबंधी मामलों में बहुत भाग्यशाली हो सकती हैं तथा पर्याप्त धन–संपदा से संपन्न हो सकती हैं। आपकी संतान भी पर्याप्त संपत्ति अर्जित कर सकती है। आप अशिष्ट व असामाजिक व्यक्तियों के साथ

मित्रवत व्यवहार कर सकते हैं। आपके शत्रु या प्रतिद्वन्दी सशस्त्र या वर्दीधारी सेना में नियुक्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध स्थित है, आप अपनी बुद्धि का उपयोग तो करते हैं, लेकिन परिणाम मददगार नहीं हो सकता। आप अजीब आदर्शों के शिकार हो सकते हैं तथा विदेशी या बिल्कुल भिन्न संस्कृतियों के साथ जुड़े हो सकते हैं। आप दूसरों को धोखा दे सकत हैं और दूसरों द्वारा धोखा खा भी सकते है।

माता, भूमि–भवन–वाहन, शिक्षा और स्वयं का परिवार और सुःख

आप बहुत गरिमापूर्ण व व्यवहारकुशल व्यक्ति होंगे। दर्शनशास्त्र में आपकी गहन रूचि हो सकती है तथा आपकी रूचि घोड़ों में भी हो सकती है। आपको अपनी स्वंतत्रता अधिक प्रिय हो सकती है। आप अपनी पसन्द के अनुसार निवास स्थान प्राप्त कर सकते हैं। संभवतः आप विदेश में निवास कर सकते हैं। आपका जीवन खुशहाल व सुख–सुविधा से पूर्ण होगा। आपको अचल संपत्ति के रूप में धन की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता दीर्घायु, भाग्यशाली, धार्मिक एवं उत्तम प्रकृत्ति की महिला होंगी तथा परोपकारी कार्यों में संलग्न हो सकती हैं। आपकी पत्नी घर के मामलों में अत्यधिक हस्तक्षेप करने वाली हो सकती हैं। आपके मित्र बहुत बुद्धिमान व निष्ठावान होंगे। आप असंभव को हासिल करने के लिए अपने मन में इच्छा बनाये रखेंगे। आप अपने प्रयासों में क्रूर हो सकते हैं, लेकिन आपके आदर्श जरुरत के समय उदार बना देंगे। आप गुप्त संबंधों में संलिप्त होना चाह सकते हैं, लेकिन आपकी शारीरिक एवं मानसिक सीमायें आपको अपना उद्देश्य प्राप्त करने में रोक सकती है।

आपकी कुण्डली के चौथे भाव में सूर्य स्थित है, आप लालची हो सकते हैं तथा अपनी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उंच–नीच का भेद खत्म करेंगे।

आपकी कुण्डली के चौथे भाव में राहु स्थित है, आप थोड़े घमंडी हो सकते हैं। इसके साथ ही आपको किसी तरह का अभाव हो सकता है। कुछ संभावना है कि आप गुप्त यौन संबंधों में संलग्न हो सकते हैं तथा दूसरों पर बुरा प्रभाव डाल सकते हैं।

सन्तान, विद्वता और बुद्धि, पूर्वपुण्य, लेखन, मानसिक स्थिति और ज्ञान

आप आराम करने वाले हो सकते हैं। आपको दुनिया के असामान्य स्रोतों के प्रति दिलचस्पी अधिक हो सकती है तथा जीवन प्रणाली के बारे में गहरा ज्ञान होगा। आप अपने प्रयासों को कियान्वित करने के लिए पूरी ताकत लगा देंगे। आपकी बातें भ्रमित करने वाली हो सकती हैं, जो कि आपको अक्सर गलत साबित कर सकती हैं। आपको जंगलों में भ्रमण करने में, गुफाओं का पता लगाने में तथा पानी के खेलों में अधिक आनन्द आ सकता है तथा आप इनके बारे में अत्यंत जानकार भी हो सकते हैं। आप कुछ हद तक दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्ति हो सकते हैं। आपको संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कन्या राशि में स्थित है– जो कि बुध द्वारा संचालित है। यह एक साधारण, नकारात्मक और भौतिक राशि है। आप शांत, मनमौजी और कुछ–कुछ ढुलमुल प्रकृति के होंगे, किन्तु आप बहुत ज्यादा

महात्वाकांक्षी नहीं हो सकते हैं, आपमें डींग हाकने वाली आदतें बिल्कुल नहीं होंगी और आप मिथ्याभिमान से सदैव घृणा करेंगे। यद्यपि आपकी बौद्धिक क्षमता काफी ऊँची होगी और आप बौद्धिक कार्यो में संलग्न रहेंगे, तो भी आप उत्तरदायित्वपूर्ण एवं किसी के अधीन तक भी रहकर काम करना पसन्द कर सकते हैं। ऐसा आप अपने जीवन में शांति की कीमत व महत्ता को बढाने के लिए करेंगे और अनावश्यक तनावों से सदैव दूर रहना चाहेंगे।

आपको अपने घर से काफी लगाव होगा और आपके प्रिय पारिवारिक जन आपके जीवन को बहुत आनन्दमय व खुशहाल बनाएंगे। कृषि, कृषि संबंधी उत्पाद, दवाएं, औषधि, भोज्य–पदार्थ, बेकरी, मिष्ठान–भंडार, घरेलू उपभोग की वस्तुएं और अन्य घरेलू उपकरण आपको अपेक्षाकृत अधिक आकर्षित करेंगे। आपका अपने सहकर्मियों, वरिष्ठों व अधीनस्थों के साथ समान रूप से सौहार्दपूर्ण संबंध होगा और यदि आपका कोई घरेलू नौकर है, तो उसका व्यवहार भी आपके प्रति बहुत अच्छा होगा एवं आपको बहुत सम्मान देगा। फुर्तीला व चौकन्ना रहना आपका सहज स्वभाव होगा, साथ ही आप कुछ हद तक रहस्यात्मक भी हो सकते हैं– जो कि आपको असाधारण रूप से सहनशील बनाएगा। पारिवारिक भाग्य का अत्यधिक पतन, या जटिल घरेलू विवाद, अथवा अन्य प्रकार का थोपा हुआ अवरोध या प्रारम्भिक जीवन के अभाव आपको कुछ हद तक अन्तर्मुखी या एकान्तप्रिय बना सकते हैं।

आप विश्लेषण–विज्ञान का औपचारिक अध्ययन कर सकते हैं, किन्तु कला–कौशल में भी आपकी उतनी ही रूचि होगी– आपको ना केवल सैद्धान्तिक विषय–सामग्री के अध्ययन की तीव्र इच्छा होगी, बल्कि आप प्रयोगात्मक पक्ष या व्यावहारिक दृष्टिकोण में भी रूचि रखेंगे– जिसको आप अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण समझेंगे। आप अपने खुद के कुछ मौलिक निष्कर्ष निकाल सकते हैं अथवा कुछ तथ्यों की खोज कर सकते हैं या कुछ उपकरणों का अविष्कार कर सकते हैं– जो कि सांसारिक गतिविधियों में उपयोगी साबित होगी। जैसे–जैसे समय व्यतीत होगा, आपकी परिपक्वता व योगदान की क्षमता में वृद्धि होगी, आपमें जोशपूर्ण व हंसमुख प्रकृति का विकास होगा, बातचीत करने में कुशल और रमणीय संकेत करने में माहिर होंगे। संभवतः कुछ अन्तर्देशीय दूरस्थ स्थानों या विदेशों की भी यात्रा कर सकते हैं– शैक्षणिक या सांस्कृतिक उद्देश्य से।

आपकी कुण्डली के पांचवें भाव में बृहस्पति स्थित है। आपको कन्या संतान की प्राप्ति अधिक हो सकती है। आप अधार्मिक कार्य करने के प्रति अधिक इच्छुक हो सकते है, लेकिन आपकी आंतरिक इच्छा उसे दूर तक ले जायेगी।

आपकी कुण्डली के पांचवें भाव में शुक्र स्थित है। आपके कामुक भावनाओं में बढ़ोतरी हो सकती है। आपके दिलो–दिमाग पर कामुक भावनायें बसी रह सकती हैं, जिससे कि कभी–कभी माता–पिता को भी बदनामी का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संलग्नता के कारण आपकी कलात्मक प्रतिभायें दबी रह सकती हैं तथा आप अपनी नापाक कार्यों से धन की प्राप्ति कर सकते हैं।

रोग और कष्ट, शत्रु, दुर्घटना, ननिहाल, नौकर और चोट

आपके द्वारा भूतकाल में किये हुए कर्म का फल प्राप्त होगा। आप विपरीत परिस्थितियों के साथ संघर्ष कर आगे

बढ़ने में सक्षम होंगे। कुछ लोग आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं एवं आपके बारे में गलत अफवाहें फैला सकते हैं। आपको संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी संतान शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं हो सकती है, उन्हें चोट लग सकती है, रोगादि से पीड़ित रह सकते हैं तथा उनके साथ आपका सौहार्दपूर्ण संबंध नहीं हो सकता है। आपको जलीय जीव–जन्तुओं या जलीय स्थानों से खतरा हो सकता है। आपको अपने शिक्षा के क्षेत्र में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है एवं अधिक शिक्षित नहीं हो सकते हैं। आप मनोदैहिक रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आपको प्रेम संबंधों में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है तथा संभवतः आपका अपने जीवनसाथी से संबंध विच्छेद हो सकता है। आप पेट या पित्ताशय से संबंधित रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

जीवनसाथी, साझेदारी, वैवाहिक सुख, प्रतिष्ठा और जीवन के प्रति उत्साह

आप बहुत दयालु होंगे एवं अपनी दयालुता के लिए आप विख्यात होंगे, जबकि आपकी पत्नी धार्मिक व विनम्र नहीं हो सकती हैं। आपकी पत्नी अपने व्यावसायिक जीवन में कुशल होंगी एवं उत्तम कार्य करेंगी। आपकी पत्नी आपसे संवेदना, सहानुभूति व समर्थन की उम्मीद कर सकती हैं। आपको अपने घरेलू मामलों में अनुकूल फलों की प्राप्ति होगी। आप उत्तम उद्देश्य के लिए त्याग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको विपरीत लिंगी व्यक्तियों से निराशा प्राप्त हो सकती है। जिसकी वजह से आप आध्यामिकता की तरफ मुड़ सकते हैं। आप दुःख, हताशा, फिजूलखर्ची एवं दांपत्य सुख में कमी के कारण मानवीय रिश्तों में अस्थायी स्वभाव का अहसास कर सकते हैं।

आयु, असाध्य रोग, मानसिक कष्ट, अप्रत्यासित लाभ–हानि, अड़चनें और छुपी हुई प्रतिभा

आपके बड़े सहोदर वर्दीधारी सेवा में संलग्न हो सकते हैं तथा उसमें उत्तम कार्य कर सकते हैं। आपके छोटे सहोदर को इस ग्रह स्थिति के कारण चोट लग सकती है। आप को विष अथवा ज्वर के कारण मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है अथवा इनसे आपको खतरा हो सकता है। आपकी संतान पर्याप्त धनोपार्जन करने में सफल हो सकती है।

आपकी कुण्डली के आठवें भाव में मंगल स्थित है, आपकी योजनायें अचानक से बेकार हो सकती हैं। जीवन से संबंधित आपकी कुछ उम्मीदें इतनी तेजी से नष्ट हो सकती हैं कि आपको कुछ करने या सोचने–समझने का भी मौका प्राप्त नहीं हो सकता है। आपका पारिवारिक जीवन खासकर अपने भाई–बहनों से संबंधित संबंध पूरी तरह से खराब हो सकते हैं।

पिता, गुरू, धार्मिक रूचि, तीर्थ यात्रा, दानशीलता और भाग्य

आपके परिवार का विदेश से संबंध हो सकता है। आप धार्मिक व दानशील प्रवृत्ति के व्यक्ति हो सकते हैं तथा दान–धर्म के लिए नियमित रूप से अन्न व भोजन दान कर सकते हैं। आपके पास जमा राशि उत्तम मात्रा में हो सकती है। धन संबधी मामलों में आप भाग्यशाली होंगे तथा आप उच्च शिक्षा से संबंधित मामलों पर अच्छी प्रकार से बोलने में सक्षम होंगे। आप धार्मिक या दार्शनिक माध्यमों से धनोपार्जन कर सकते हैं तथा आप स्वयं एक गुरु बन सकते हैं। आप अपने पिता को अपने धनी होने का मान करवा सकते हैं।

व्यवसाय, कर्म, आजिविका के साधन, व्यापार और धार्मिक कार्य

आपको अपने जीवन के उद्देश्य स्पष्ट होंगे तथा आप अपनी जिम्मेदारियों से अवगत होंगे। आमतौर पर बौद्धिक रुप से आप बहुत उज्जवल होंगे। आप अस्थायी एवं आध्यात्मिक दुनिया के बीच में फंसे हो सकते हैं। आप उच्च स्तर के नियम का पालन करके एवं अपनी चेतना को निचले स्तर पर छोड़कर समता प्राप्त करने में सफल होंगे। आपके कार्य का संबंध बौद्धिक क्षेत्र से हो सकता है। आप परिवर्तनशील, लचीले, व्यावहारिक एवं मिलनसार प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्य के प्रति आपका दृष्टिकोण बहुमुखी हो सकता है। हालांकि आप इसके प्रति गंभीर नहीं हो सकते हैं। आप मार्केटिंग संचालक, संपादक, व्यापारी, कमीशन एजेन्ट या प्रकाशक के रूप में उत्तम कार्य कर सकते हैं। संभवतः आपके कार्य का संबंध प्रकाशन, लेखन, पत्रकारिता, छपाई, विज्ञापन आदि जैसे क्षेत्रों से भी हो सकता है। आप शांत भाव से अपना कार्य कर सकते हैं एवं कई बार आपके योगदान को पहचान प्राप्त नहीं हो सकती है। आप शांत, निर्मल, मधुर व सामंजस्यपूर्ण वातावरण में कार्य करने का प्रयास करेंगे।

आपकी कुण्डली के दसवें भाव में शनि स्थित है। आपकी संतान विदेशों में सफलता प्राप्त करेगी। आप स्वयं अंर्तराष्ट्रीय कानून के विशेषज्ञ के रुप में जाने जायेंगे। मनोवैज्ञानिक रुप से आप बहुत व्यथित महसूस कर सकते हैं। शायद ही कभी आपको अपनी विशेष विशेषज्ञता व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हों। कभी–कभी आपको अपने पेशेवर जीवन में गंभीर झटके लग सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दसवें भाव में केतु स्थित है। आपके लिए मानसिक शांति एवं व्यक्तिगत नैतिकता से संबंधित चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो सकती है। दूसरे लोग आपके साथ मित्रता करना नहीं चाह सकते हैं।

लाभ, भौतिक सुख की प्राप्ति, लोभ, पुरस्कार और दण्ड और स्वास्थ्य लाभ

आप सभ्य एवं विकसित लोगों के संपर्क में आयेंगे। आपका दिमाग विकसित होगा तथा पूरी दुनिया के लोगों पर होने वाली क्रूरता के प्रति संवेदनशील होंगे। आप अपने जीवन में महत्वाकांक्षी रुख अपनायेंगे, लेकिन बाद में आप अपना पेशा बदल सकते हैं तथा खेती या दूसरे व्यापारिक गतिविधियों से धनोपार्जन कर सकते हैं। आप धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करेंगे, जीवन की समस्याओं पर चिंतन करेंगे तथा चारों तरफ से प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आप उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली सेवाओं, कृषि, बर्तनों व उपयोगी वस्तुओं के माध्यम से धनार्जन कर सकते हैं। चूंकि कर्क राशि चावल, दूध, पानी, स्त्री, दर्पण, सफेद फूल, ठण्डी वस्तुएं, जलीय जीव–जन्तु, जलस्थल आदि का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए आप इन वस्तुओं से संबंधित कार्य में संलग्न हो सकते हैं तथा उत्तम धनोपार्जन कर सकते हैं।

व्यय, अलगाव, हानि, सुख, निद्रा, विदेश यात्रा और मानसिक संतुलन

आपकी प्रतिष्ठा पर आंच आ सकती है। आमलोग आप पर भरोसा नहीं कर सकते तथा आपकी निष्ठा पर सवाल खड़ा हो सकता है। आपके अंदर काम वासना अनियंत्रित हो सकती है, जिसकी वजह से आपके करीबी मित्र भी आपको छोड़ सकते है। आप परोपकारी प्रवृत्ति के होंगे एवं अपनी इस प्रवृत्ति के कारण अत्यधिक व्यय कर सकते

हैं। आपको संतान से पर्याप्त सुख प्राप्त नहीं हो सकता है तथा वे संभवतः आपके लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं अथवा वे आपको छोड़कर कहीं दूर निवास करने जा सकते हैं। आपमें अकेले निवास करने की अनोखी योग्यता विद्यमान हो सकती है तथा आप इसका प्रयोग किसी सार्थक उद्देश्य के लिए कर सकते हैं। जुआ व सट्टा आदि आपके लिए लाभपद्र नहीं हो सकता है। सरकारी कार्यवाही के कारण आपका धन समाप्त हो सकता है।

शुभ और अशुभ ग्रह

1– दूसरे व नौवें भाव का स्वामी शुक्र, शुभ है।

2– लग्नेश बुध, सर्वाधिक शुभ है।

3– सातवें भाव का स्वामी बृहस्पति, मारकेश है।

4– चंद्रमा अशुभ है।

5– तीसरे व आठवें भाव का स्वामी मंगल, सर्वाधिक अशुभ है।

6– सूर्य और शनि तटस्थ हैं।

सर्व ग्रह दोष और उपाय

सूर्य से संबंधित दोष और उनके उपाय

सपात सूर्य दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।

2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।

3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।

4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

चन्द्रमा से संबंधित दोष और उनके उपाय

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई–बहनों अथवा अपने माता–पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख–शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

शांति के उपाय –

अपने घर में किसी साफ–सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको चंद्रमा के सरल उपाय करने के साथ–साथ रूद्रसूक्त का भी पाठ करना चाहिए।

क्षीण चन्द्र दोष

यदि आपका जन्म कृष्णपष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी–कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ भगवान शंकर की पूजा करें। चंद्रमा जितना अधिक क्षीण हो, पूजा की मात्रा उतनी अधिक होनी चाहिए।

केमद्रुम योग दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुम योग का प्रभाव कम हो जाता है।

आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवान शंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

मंगल से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में मंगल मेष राशि में बैठा हुआ है। आप स्वभाव से उग्र और तानाशाह हो सकते हैं। विपरीत

लिंग वाले आपके प्रति खास आकर्षण महसूस कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपका उनसे किसी कारणवश अलगाव भी हो सकता है।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ऊँ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार––बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात ना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

बुध से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। आप चालाक एवं झगड़ालू स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके

मित्र स्वार्थी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, छठे या बारहवें भाव में स्थित है। आपमें संकोच और निराशा की भावना कभी–कभी बहुत ही ज्यादा हो सकती है।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुललाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों––फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए शीतला माता के मंत्र का 10 हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से 1000 आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्त्र नाम का जप करना चाहिए।

बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1– बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।

2– अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।

3– किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

बृहस्पति से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति मकर राशि में स्थित है। आपमें धैर्य एवं बुद्धि की कमी हो सकती है। पर्याप्त मेहनत के बावजूद आपको उचित सफलता नहीं मिल सकती है। भाई–बन्धुओं से प्रेम एवं सहयोग की कमी हो सकती है। विवाहित जीवन में कटुता आ सकती है। आपमें अपना भला बुरा समझने की समझ कम हो सकती है।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम–धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह–शाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनते–बनते रह जा रहा हो, तो तीन सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

बृहस्पति ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1– शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु–संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।

2– कोर्ट–कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

शुक्र से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। विपरीत लिंग के अपने से बड़े व्यक्ति के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपको हानि भी हो सकती है। आप हृदय रोग से पीड़ित हो सकती हैं।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओं का पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव––पार्वती या विष्णु––लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम––वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रूझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार––बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1– अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।

2– कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शनि से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। आप प्रायः कर्जदारी की वजह से परेशान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं। आपके सिर या मस्तिष्क में किसी तरह के विकार होने की संभावना है। अपने ससुराल वालों के कारण कष्ट प्राप्त हो सकता है।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्री का नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार––बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ–सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

स्वास्थ्य सुख

मनुष्य के जीवन में सुख–दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस–पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में यदि ग्रहों की दशा को देखकर उपचार के साथ–साथ ज्योतिषिय उपाय भी किया जाय तो संभवतः रोग से निजात शीघ्रता से पाया जा सके।

स्वास्थ्य से संबंधित योग और उपाय

स्वास्थ्य सुख से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी अपनी राशि में उपस्थित है। आपकी आयु लम्बी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि उच्च राशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में उपस्थित है। आप दीर्घायु होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी बली/शक्तिशाली होकर तीसरे, ग्यारहवें अथवा केन्द्र में स्थित है। आपकी आयु लम्बी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी सूर्य का मित्र है। आप दीर्घायु होंगे।

स्वास्थ्य सुख से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी एवं आठवें भाव का स्वामी एक दूसरे के सम ग्रह हैं। आप मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा पहले भाव के स्वामी एवं चंद्र लग्न से आठवें भाव का स्वामी एक दूसरे के सम हैं। आप मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का नवांशेश एवं लग्न से अष्टम भाव का नवांशेश एक दूसरे के सम हैं। आप मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र नवांशेश एवं चंद्र लग्न से अष्टम भाव के नवांशेश परस्पर मित्र हैं। आप मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवे, आठवें या ग्यारहवें भाव में एक से ज्यादा अशुभ ग्रह उपस्थित हैं। आप मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में छठे भाव का स्वामी पहले, आठवें या दसवें भाव में पाप युक्त अथवा पाप दृष्ट है। आपको किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित होने की संभावना अधिक है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – धार्मिक स्थानों की यात्रा करें।

स्वास्थ्य सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) गुरुवार के दिन एक श्वेत वस्त्र में एक लौंग का जोड़ा व थोड़ा सा कपूर बांधकर रोगी के हाथ में बांध देना चाहिए। यदि पुरुष बीमार हो तो उसके बाएं हाथ में तथा यदि कोई स्त्री बीमार हो तो उसके दाएं हाथ में बांधना चाहिए। इससे रोगी शीघ्र स्वस्थ्य होने लगेगा।

(2) यदि आपके घर में कोई बच्चा किसी रोग से पीड़ित है तो आपको यह उपाय या तो उस बच्चे से या उसकी माँ को स्वयं करना चाहिए। इस उपाय को किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि के दिन करें। इस दिन प्रातःकाल स्नान आदि करके स्वच्छ वस्त्र पहनकर अपने घर के पूजा स्थान में ही माँ दुर्गा की तस्वीर के सामने शुद्ध घी का दीप जलाएं व माँ का तिलक करें और साबूदाने की खीर व एक लौंग का जोड़ा भोग के रूप में अर्पित करें। इसके बाद श्री दुर्गा चालीसा व श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा का पाठ करें एवं नौ बार श्री दुर्गा सप्तश्लोकी व एक बार श्री सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का भी पाठ करें। पाठ पूर्ण हो जाने के बाद माँ से उनके स्वयं

माँ होने का वास्ता देते हुए एक माँ का दर्द समझने व अपनी संतान के स्वस्थ्य होने हेतु प्रार्थना करें और प्रणाम कर भोग लगाए हुए खीर व लौंग के प्रसाद स्वरूप उठाकर लेकर बाहर आ जाएं। उस खीर वाले प्रसाद में से थोड़ा सा प्रसाद अलग करके बाकी प्रसाद को किसी 9 वर्ष से कम आयु की कन्या को रोली से तिलक कर दे दें। खीर देने के साथ–साथ कन्या को कुछ नगद दक्षिणा भी दें और उस कन्या से निवेदन करें कि वह उस बची हुई थोड़ी सी खीर को अपने हाथों से आपकी संतान को खिला दें। इसके बाद आप उस लौंग के जौड़े में 9 और लौंग मिलाकर उसे अग्नि प्रज्ज्वलित कर उसमें डालकर उसका भभूत तैयार कर लें। अब आप नियमित रूप से प्रतिदिन अपनी संतान का उस भभूत से तिलक करती रहें जब तक कि आपकी संतान रोग मुक्त न हो जाए।

(3) यदि दवाई न लगती हो, तो रोगी की दवाइयों को मंदिर में (घर के) रख कर रोगी को दें, तो दवाई राम बाण की तरह काम करेगी तथा रोगी जल्दी ठीक हो जाएगा।

(4) किसी तालाब, कूप या समुद्र में जहां मछलियाँ हों, उनको शुक्रवार से शुक्रवार तक आटे की गोलियां, शक्कर मिला कर, चुगावें। प्रतिदिन लगभग 125 ग्राम गोलियां होनी चाहिए। रोगी ठीक होता चला जायेगा।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय

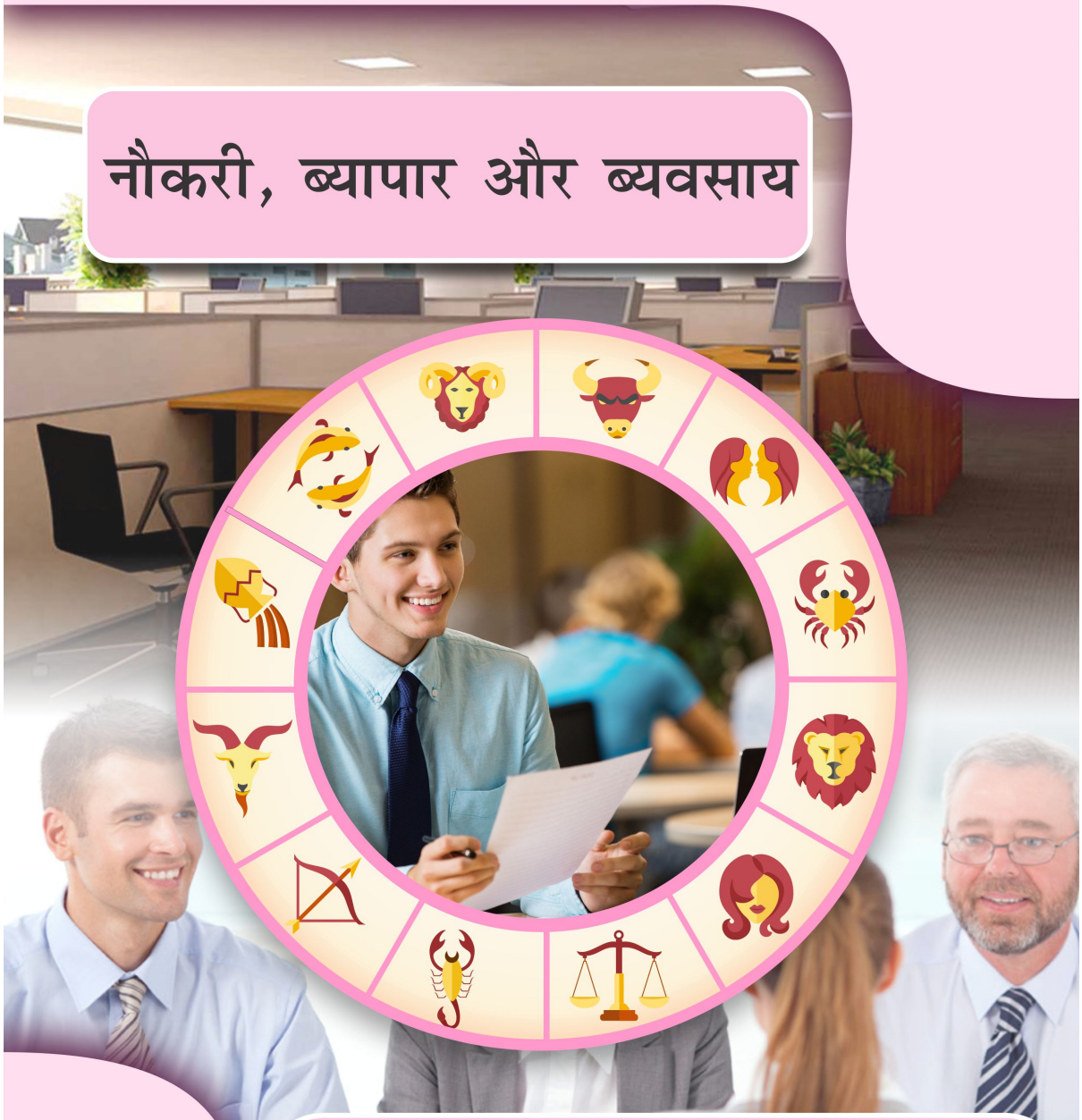

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है। ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों को समय रहते जान कर उसके लिए उपाय करे तो संभवतः वह इन बाधाओं को दूर करने में सफल भी हो सकता है।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित योग और उपाय

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश, नवमेश, चंद्रमा और बृहस्पति चारों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति शक्तिशाली राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति द्वितीयेश के साथ शुभ भाव में स्थित है। आप सर्वोच्च पद व अधिकार का सुख प्राप्त करेंगे।

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, जैसाकि ये दोनों ही ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं, अतः यह योग बहुत शुभ होगा, क्योंकि सूर्य आपकी कुण्डली में शुभ–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी शुभ करतरी योग कहा जाता है। जैसाकि यह योग अनेक अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं का सूचक है, आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन में काफी कम आयु में ही एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे, जीवन की सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे तथा आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में बुध मंगल की राशि में स्थित है। आपको अपने व्यापार में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा तथा आर्थिक हानि भी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है। आपको अपने व्यवसाय या नौकरी अथवा जो भी कार्य आप करते हैं उसमें बाधाएं आती रहेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव में कोई वक्री, अस्त अथवा नीच राशि का ग्रह स्थित है। आपको अपने आर्थिक क्रिया कलापों व जीविकोपार्जन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य ग्रहण योग बना रहा है। इसलिए आपको सरकारी नौकरी मिलने की उम्मीद अत्यंत कम है। यदि किसी अन्य योग के प्रभाव से सरकारी नौकरी आपको प्राप्त हो भी जाएगी तो भी आपको उसमें अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – बन्दर को गुड़ खिलायें। झूठी गवाही न दें।

जीविकोपार्जन/नौकरी/ब्यापार बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) व्यापार वृद्धि हेतु, शनिवार को छोड़ कर किसी भी दिन एक पीपल का पत्ता लेकर, गंगाजल से धोकर उस पर तीन बार 'नमः भगवते वासुदेवाय नमः' लिख कर, पत्ते को पूजा स्थल पर रख लें। उसकी आराधना करें। नित्य धूप, अगरबत्ती की धूनी दें तो ईश्वर की कृपा से सब बाधाऐं दूर हो जायेंगी।

(3) व्यापार वृद्धि हेतु, शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से इसे प्रारंभ करें। सर्वप्रथम साधक, ब्रह्म मुहूर्त में, शैय्या त्याग, दैनिक नित्य कार्यों से निवृत्त हो, घर, या व्यापार स्थल के उत्तरी कोण को गंगा जल से धो कर पवित्र करे। उस पर शुद्ध पिसी हल्दी, जिसमें मिर्चादि का अंश न हो, ले कर एक सुंदर स्वास्तिक बनाएं, स्वास्तिक में 4 बिंदियां अवश्य हों। स्वस्तिक के मध्य भाग में चने की दाल 50 ग्राम तथा 50 ग्राम गुड़ रख कर, आवश्यक हो तो एक नयी टोकरी से ढक दें, या ऐसे ही खुला छोड़ दें। इसे बार–बार न देखें प्रत्येक गुरुवार इस क्रिया को दोहराएं। अशुद्ध स्त्री की छाया से जहाँ तक संभव हो स्वयं को बचाए रखें।

(4) कारोबार में समस्या आ रही हो, व्यवसाय चल नहीं रहा हो और कर्ज से परेशान हो रहे हो तो इस प्रयोग को करके देखें। यह प्रयोग किसी भी महीने शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार के दिन शुरू करें और नियमित 186 दिन करें। हर रोज स्नानोपरांत पीपल, बरगद या तुलसी के पेड़ के नीचे चौमुखा देसी घी का दीपक जलाएं। और शुद्ध कंबल का आसन बिछाकर एक पाठ विष्णु सहस्रनाम का करें तथा 11 माला ओम् नमो भगवते वासुदेवाय नमः मंत्र का जाप करें। मां लक्ष्मी की कृपा होगी और कारोबारी समस्या का निवारण हो जाएगा।

विवाह

सामान्यतः गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिए प्रथम और अनिवार्य शर्त विवाह को माना जाता है। इसलिए इसका हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं जिनमें विवाह से संबधित बाधाएं भी होती हैं। जैसे इच्छानुकुल वर या वधु का न मिलना, विवाह योग्य आयु होने पर विवाह न हो पाना, विवाह में किन्ही कारणवश विलम्ब होना, वर या वधु के सर्वगुण सम्पन्न होने के बाद भी विवाह न हो पाना, विवाह के लिए आर्थिक अभाव का आड़े आना आदि। ज्योतिषिय दृष्टिकोण से ऐसी बाधाओं या कठिनाईयों का कारण व्यक्ति के जन्म कुंडली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव के कारण होता है। विवाह तथा वैवाहिक जीवन को ग्रहों के अच्छे व बुरे प्रभाव सर्वथा प्रभावित करते हैं। यदि इनके अशुभ प्रभावों को विवाह के पूर्व ही ज्ञात कर लिया जाए तो इन प्रतिकूल प्रभावों का निवारण कर वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है। यहाँ हम जातक/जातिका की कुण्डली में स्थित ऐसे योग की जाँच करेंगे, इन बाधक योगों की संख्या जितनी अधिक होगी विवाह में उतना ही विलम्ब/कष्ट आदि की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

विवाह से संबंधित योग और उपाय

विवाह से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश व सप्तमेश की केन्द्र या त्रिकोण भाव में युति है। आपका एक ही विवाह होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें अथवा पांचवें भाव के स्वामी की युति नौवें भाव के स्वामी के साथ है। संभावना है कि आप प्रेम विवाह कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र जन्म लग्न अथवा चंद्र लग्न से पांचवें भाव में उपस्थित है। आपके प्रेम विवाह करने की संभावना अधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव के स्वामी की शुभ ग्रहों से युति है अथवा शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है अथवा शुभ नवांश में होकर केंद्र में स्थित है। आपका विवाह सुन्दर, सुशील, सद्गुणी एवं पतिव्रता धर्म का पालन करने वाली कन्या से होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी सर्वोत्तम नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

विवाह से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश चर राशि में स्थित है। यह योग आपका दो विवाह होने की संभावना को दर्शाता है।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी अपनी नीच राशि में स्थित है। आपके विवाह में अड़चनें व रुकावटें आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने घर में गेंदा या सूर्यमुखी का पौधा लगायें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव पर शनि की दृष्टि पड़ रही है तथा शनि सातवें भाव का स्वामी नहीं है। आपका विवाह सामान्यतः 28 वर्ष की आयु में होगा अर्थात विलम्ब से होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – पीतल के बर्तन में गंगाजल डालकर घर में रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव के स्वामी की दूसरी राशि में कोई पापी ग्रह बैठा हुआ है। आपके विवाह में अनेक बाधाएं आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – विष्णु भगवान की पूजा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे, चौथे तथा सातवें भाव पर पाप प्रभाव है। आपके विवाह में कई रुकावटें उत्पन्न होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी किसी त्रिक भाव में स्थित है अथवा नीच या अस्त है। आपके विवाह में अड़चनें आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – मंदिर से प्रसाद न लें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी अथवा शुक्र नीच नवांश में स्थित है। आपका विवाह खूबसूरत कन्या से नहीं हो सकता है तथा साथ ही वे रोगग्रस्त, कटु वचन बोलने वाली एवं कर्कश स्वभाव की हो सकती

हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – गणेश जी की पूजा करें। बुढ़ी औरतों की सेवा करें।

विवाह बाधा समाप्ति के सरल उपाय

(1) कुंवारे व्यक्ति के शयन कक्ष में सोने की स्थिति पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। शयन कक्ष के दरवाजे के सामने सिर या पांव नहीं होना चाहिए तथा अच्छे वर या कन्या को आकर्षित करने के लिए, सिर के सामने सुंदर क्रिस्टल बॉल और आकर्षक झूमर अवश्य लगा होना चाहिए। इससे विवाह शीघ्र होने की संभावनाएं बनने लगती हैं।

(2) पुरुषों के विवाह में यदि रुकावटें और विलंब हों, तो दोमुखी रुद्राक्ष के पांच दाने लें। एक कटोरी जल में उन्हें पूजा में रखें। धूप, दीप जलाएं। प्रतिदिन तीन माला ' पार्वती वल्लवभायु स्वाहा' का जाप करें। यह प्रयोग करीब तीन महीने तक करें। जल पौधे पर चढ़ा दें। तीन महीने की पूजा के पश्चात् एक रुद्राक्ष गणेश पर, एक रुद्राक्ष पार्वती पर, एक रुद्राक्ष कार्तिकेय पर, एक रुद्राक्ष नदी को और एक रुद्राक्ष शिवभगवान् पर चढ़ा दें। शिवलिंग पर जल चढ़ाएं और आराधना करते हुए प्रभु भोलेनाथ से प्रार्थना करें। यह बहुत चमत्कारी टोटका है। अवश्य शीघ्र विवाह के लिए रिश्ते आने लगते हैं। यह उपाय शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से आरंभ करें। रुद्राक्ष की पवित्र माला से जाप करें।

(3) यदि विवाह के अच्छे प्रस्ताव नहीं आ रहे हों, तो वर के कक्ष में पूर्वोत्तर दिशा में पानी का फव्वारा रखें। वार्ता के लिए घर आने वाले मेहमानों को ड्राइंग रूम में इस प्रकार बैठाना चाहिए कि उनका मुंह घर के अंदर की ओर रहे, उन्हें द्वार दिखाई न दे।

(4) यदि कहीं लड़की की शादी हो रही हो, तो शगुन के पैसे को लड़के, या लड़की का हाथ जरूर लगवाएं। शगुन उसको दें, जो जानता नहीं, या बाहर किसी व्यक्ति को शगुन दे कर कहें : लड़की वालों को शगुन दे दो। मुझे कहीं जरूरी जाना है। इससे भी शादी की रुकावट दूर हो जाएगी।

दाम्पत्य सुख

व्यक्ति के विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन की शुरुआत होती है। यह जीवन का वह भाग है जिसमें व्यक्ति का सर्वाधिक समय व्यतीत होता है। इसलिए इसके सुखमय अथवा कष्टमय होने से व्यक्ति का सारा जीवन प्रभावित होता है। दाम्पत्य जीवन पति–पत्नी दोनों के आपसी समझ, सामंजस्य, प्रेम, समर्पण, सहानुभूति, मधुरता, अपनापन आदि से मिलकर बनता है। यदि इनके विपरीत गुणों का समावेश दाम्पत्य जीवन में होने लगता है, तो परिस्थिति सुखमय होने की बजाय कष्टमय होने लगती है। सामान्यतः पति–पत्नी दोनों की ही यह जिम्मेदारी होती है कि वे अपने–अपने दायित्वों का पालन निष्ठा व प्रेम से करें। जिससे कि घर–परिवार में कलह क्लेश की स्थिति उत्पन्न न हो, परन्तु किन्हीं कारण वश ऐसा सदैव कर पाना संभव नहीं हो पाता है और दाम्पत्य सुख लुप्त होने लगता है। ज्योतिषशास्त्र में दाम्पत्य जीवन में होने वाले वाद–विवाद, कलह, अशांति आदि को दाम्पत्य सुख में बाधक माना गया है, जो कि ग्रहों के प्रतिकूल होने के कारण उत्पन्न होता है। यदि ग्रहों की प्रतिकूलता को पहले ही ज्ञात करके उसके अनुसार आचरण व उपाय किया जाय तो दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है। यहाँ हम जातक/जातिका की कुण्डली में स्थित ऐसे योग की जाँच करेंगे, इन बाधक योगों की संख्या जितनी अधिक होगी दाम्पत्य सुख में प्रतिकूलता, वाद–विवाद, कलह, अशांति आदि की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

दाम्पत्य सुख से संबंधित योग और उपाय

दाम्पत्य सुख से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेष विषम राशि में स्थित है। आप एक पुरुष देवता की अराधना करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, पाँचवें भाव में सम राशि है। आप एक देवी की अराधना करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश व सप्तमेश की केन्द्र या त्रिकोण भाव में युति है। आपका एक ही विवाह होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी सर्वोत्तम नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

आपकी कुण्डली में दामिनी योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक प्रशंसनीय ग्रह स्थिति है। आप बहुत समृद्ध होंगे, पूर्णतः सभ्य प्रकृति, धैर्यवान और बहुत विद्वान होंगे। आप उदार प्रवृति वाले होंगे तथा सदैव दूसरों के प्रति करूणा का भाव रखेंगे। आप जानवरों के प्रति दयालु होंगे एवं उनकी किसी प्रकार से सेवा भी करेंगे। आप पारम्परिक धार्मिक रीतियों का निर्वाहन करेंगे, सुखमय व शांतिपूर्ण वैवाहिक जीवन का आनन्द लेंगे तथा आपकी संतानें योग्य और कर्तव्यनिष्ठ होंगी। आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, जैसाकि ये दोनों ही ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं, अतः यह योग बहुत शुभ होगा, क्योंकि सूर्य आपकी कुण्डली में शुभ–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी शुभ करतरी योग कहा जाता है। जैसाकि यह योग अनेक अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं का सूचक है, आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन में काफी कम आयु में ही एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे, जीवन की सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे तथा आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

दाम्पत्य सुख से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीचस्थ है तथा द्वादशेश चौथे भाव में बैठा हुआ है। आपका जीवन सार्थक नहीं हो सकता है, आप इर्ष्यालु प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा आपको दुखी व कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – कुत्ता पालें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी एवं चन्द्र राशि का स्वामी दोनों में से कोई अपनी नीच राशि में है। आपके दाम्पत्य जीवन में अनेक बाधाएं उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय

करें – यदि आप पुत्र के साथ यात्रा कर रहे हैं, तो नदी इत्यादि में ताँबे का पैसा डालें। बृहस्पतिवार का व्रत रखें। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – बृहस्पतिवार का व्रत रखें। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – कोई भी दान और उपहार न लें।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र एवं शनि एक दूसरे से छठे व आठवें भाव में स्थित हैं। आपको जननांग से संबंधित रोग होने की संभावना अधिक हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि आठवें या दसवें भाव में स्थित है एवं उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं पड़ रही है। आपमें प्रजनन क्षमता की कमी हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में एक से अधिक पाप ग्रह चौथे भाव में उपस्थित हैं एवं दूसरे पाप ग्रह की उन पर दृष्टि पड़ रही है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र से चौथे अथवा आठवें भाव में पाप ग्रह उपस्थित है। आपकी पत्नी को आग से गंभीर खतरा होने की संभावना है।

दाम्पत्य सुख प्राप्ति के सरल उपाय

(1) परिवार में झगड़ा हो रहा हो, तो आप किसी विशेष त्यौहार या किसी शुभ योग में मोरपंख का बनावटी मोरपंख बनाकर अपने घर में रख दें। ऐसा करने से आपकी समस्या सदैव के लिए समाप्त हो जायेगी।

(3) मानसिक तनाव, थकान दूर करने के लिए, बिना किसी दवा के, निम्न टोटके द्वारा, उपर्युक्त समस्या का निवारण करें। प्रातः उठ कर, सूर्य की ओर देखते हुए, अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर, निम्न मंत्र का ग्यारह बार जप करें :

हीं हीं हीं उफ।

इससे पूरे दिन तनाव मुक्त रहेंगे। साथ ही रोग दूर भाग जाएंगे।

(4) घर में वातावरण को शांतिमय बनाने के लिए, यदि मुख्य द्वार दक्षिण में है तो यह शुभ नहीं माना जाता। गणेश जी के चित्र वाला गोल सिक्का मुख्य द्वार पर लगाएं, दाहिनी ओर सूंड हो, एक सिक्का बाहर और एक अंदर लगाएं। गणपति के द्वादश नाम का स्मरण प्रतिदिन करें, प्रातः पूजा में साथ ही एक माला गौरी पुत्राय गणेशाय नमः प्रतिदिन रुद्राक्ष की माला से जपें।

मकान/आवास सुख

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह–तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख–शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करनें में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार–चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग–अलग होने के कारण सबको अलग–अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

मकान/आवास सुख से संबंधित योग और उपाय

मकान/आवास सुख से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश व नवमेश द्वादशेश से दूसरी राशि में स्थित हैं। आप एक भव्य भवन में निवास करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

मकान/आवास सुख से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु एक अशुभ ग्रह के साथ चौथे भाव में स्थित है तथा उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। यह एक प्रतिकूल योग है। संभवतः आपका अपना कोई घर नहीं हो सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भाग–दौड़ वाले काम न करें। गोमेद धारण करें।

आपकी जन्मकुण्डली में, षष्ठेश एक अशुभ ग्रह के साथ स्थित है तथा द्वादशेश पर दृष्टि डाल रहा है। संभवतः आप अपने प्रारम्भिक जीवन में ही अपने पिता एवं धन–संपदा को खो सकते हैं तथा आपको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भैरों मंदिर में शराब का दान न करें। सरकारी कर्मचारियों से बैर न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है। आपको आवास सुख की प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव में किसी अशुभ भाव का स्वामी स्थित है। आपके आवास सुख में कठिनाईयां आएंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव पर पापी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आपको अपने आवास सुख की प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव का स्वामी अपनी नीच राशि में स्थित है। यदि आपको अन्य ग्रहों के प्रभाव से आवास सुख प्राप्त हो भी जाएगा तो भी आपके पास वह भवन अधिक समय तक नहीं रहेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – पीपल के पेड़ की सेवा करें।

भवन/आवास सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) अचल संपत्ति, पैतृक संपत्ति प्राप्ति हेतु, शुक्रवार के दिन मध्याह्न पूर्व शिव जी पर दूध चढ़ावें तथा इसके उपरांत किसी भूखे व्यक्ति को भर पेट भोजन कराएं। रविवार के दिन गाय को गुड़ खाने को दें। यह प्रयोग नियमित कुछ माह तक करें। ईश्वर की कृपा से अचल संपत्ति (मकानादि) की प्राप्ति संभव हो सकेगी। शिव जी (शिव परिवार) पर दूध चढ़ाने के बाद, यदि संभव हो सके तो, निम्न मंत्र की 1 माला का जाप करें। इससे कार्य में शीघ्रता आएगी।

मंत्र : दुर्गे स्मृतां हरसि, भीतिम शेष जंतोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रयदुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

(2) घर के प्रवेशद्वार पर नीबू या संतरे का पौधा लगाने से घर में सम्पदा की वृद्धि होती है।

(3) घर के ड्राइंगरूम में परिवार के सदस्यों का सामूहिक हँसमुख चित्र लगायें तथा दिन में एक समय परिवार के सदस्यों को एक साथ भोजन करना चाहिए। इससे परस्पर संबंधों में प्रेम बढ़ता है।

(4) अपने घर के मुख्य द्वार पर सिंदूर से स्वास्तिक का चिन्ह बनायें जो 9 अंगुल लंबा और 9 अंगुल चौड़ा हो उससे वास्तुदोष में न्यूनता आती है।

वाहन/सवारी सुख

आधुनिक समय में भौतिक भोग विलास की वस्तुएं इस प्रकार से जीवन में अपना स्थान बनाती जा रहीं हैं कि उनके बिना जीवन कठिन प्रतीत होने लगता है। इस वैज्ञानिक युग में जितनी तेज गति से विकास हो रहा है व्यक्ति को भी उसी के अनुसार अपनी गति बढ़ानी पड़ रही है। अब वो समय नहीं रहा कि लोग बैलगाड़ी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई–कई दिन में जाएं। इसके लिए आधुनिक वाहनों का जीवन में महत्व बढ़ता ही जा रहा है, बल्कि ये कह सकते हैं कि यह इच्छा ही नहीं आवश्यकता बन गई है। चूंकि सभी के लिए वाहन आवश्यक होता जा रहा है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सबको वाहन सुख प्राप्त ही हो। किसी के पास अनेकोनेक वाहन होते हैं तो कोई उसे लाख प्रयत्न करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पाता है, कोई व्यक्ति वाहन होते हुए भी उसका भरपूर सुख नहीं उठा पाता है आदि की तरह जीवन में अनेक ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। ज्योतिष की दृष्टि से देखा जाय तो यह अन्तर व्यक्ति के जन्म के समय में स्थित ग्रहों के प्रभाव के कारण होता है। यदि व्यक्ति अपने जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव को पहले ही जान कर उसके अनुसार वाहन का जीवन में प्रयोग करे तो वह स्वयं की सुरक्षा के साथ–साथ वाहन का सुख भी भरपूर प्राप्त कर सकता है।

वाहन/सवारी सुख से संबंधित योग और उपाय

वाहन/सवारी सुख से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश व नवमेश एक साथ मित्र राशि में स्थित हैं तथा बृहस्पति अशुभ ग्रह से पीड़ित नहीं है। आपको अपार धन–संपदा की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव का स्वामी गुरु, शुक्र या चंद्र के साथ केंद्र या त्रिकोण में स्थित है। आपको अनेक वाहनों का सुख अपने जीवन में प्राप्त होगा।

वाहन/सवारी सुख से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु एक अशुभ ग्रह के साथ चौथे भाव में स्थित है तथा उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। यह एक प्रतिकूल योग है। संभवतः आपका अपना कोई घर नहीं हो सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भाग–दौड़ वाले काम न करें। हरिद्वार में गंगा स्नान करें।

आपकी जन्मकुण्डली में, षष्ठेश एक अशुभ ग्रह के साथ स्थित है तथा द्वादशेश पर दृष्टि डाल रहा है। संभवतः आप अपने प्रारम्भिक जीवन में ही अपने पिता एवं धन–संपदा को खो सकते हैं तथा आपको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – 48 वर्ष से पहने मकान न बनवायें। सोना पहनें।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव में कोई अस्त, वक्री अथवा नीच का ग्रह स्थित है जिससे चौथा भाव दूषित हो गया है। आपको वाहन सुख प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

वाहन सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) वाहन सुख बाधा को दूर करने के लिए माह के प्रथम शुक्रवार को 300 ग्राम काले तिल को भिगों दें तथा उसमें गुड़ भी डाल दें। अगले दिन उसमें थोड़ा से दूध और मिश्री मिला कर उसे पीस लें। उसके बाद उसमें थोड़ा सा भूना हुआ बेसन मिलाकर उसके पांच लड्डू बना लें। अब उनमें से एक लड्डू सबसे पहले माता लक्ष्मी के मंदिर में चढ़ाएं, एक लड्डू गाय को खिलाएं, एक लड्डू कत्ते को खिलाएं, एक लड्डू पीपल पर रखें और अन्य शेष लड्डू किसी भिखारी को दे दें। ऐसा आप लगातार तीन बार करें। ऐसा करने से वाहन सुख में आने वाली बाधाएं दूर हो जाएंगी।

(2) यदि आपको ऐसा लगता है कि आप जब भी वाहन खरीदने की योजना बनाते हैं तो कोई न कोई बाधा आ जाती है जिससे आप वाहन नहीं खरीद पाते हैं तो माह के प्रथम बुधवार के दिन सायंकाल के समय स्नान आदि करके कोई भी गहरे रंग का स्वच्छ वस्त्र धारण करें और अपने घर पर ही बैठकर अपने इष्टदेव को धूप, दीप अर्पित कर उनसे अपनी समस्या के समाधान के लिए निवेदन करें। उसके बाद 21 बार ''द्रीं द्रीं द्रों सः बाधा निवाराणाय कार्य सिद्धि देहि दापाय नमो नमः'' इस मंत्र का जाप करें। जाप करने के बाद एक नीले रंग के वस्त्र में एक जटा नारियल, एक लकड़ी के कोयले का बड़ा टुकड़ा, 3 अभिमंत्रित गोमती चक्र, 100 ग्राम काला तिल

और एक लोहे की कील रखकर उसे बांध दें। अब 'भ्रां भ्रीं भ्रों सः राहवे नमः' मंत्र का उच्चारण करते हुए उस पोटली को अपने ऊपर से सात बार उल्टा उसारें। ध्यान रहे मंत्र का उच्चारण जितनी बार उसारे उतनी ही बार करें अर्थात सात बार उसारें व हर उसारे में एक बार ही मंत्र कहें। इसके बाद उस पोटली को किसी तेज बहती धारा में प्रवाहित कर प्रणाम करके वापिस घर आ जाएं, परन्तु प्रवाहित करने के बाद लौटते समय पीछे मुड़कर कदापि न देखें। वापिसी में एक इमरती किसी कुत्ते को खिलाएं और घर आ जाएं, परन्तु घर में बिना हाथ पैर धोए प्रवेश न करें। इस उपाय को आपको लगातार सात बुधवार को विश्वास के साथ करना है। इससे वाहन क्रय करने में आने वाली बाधा अवश्य दूर हो जाएगी।

माता-पिता, भाई-बन्धु और संतान

परिवार की बात की जाए तो यह मात्र पति–पत्नी से पूर्ण नहीं माना जाता जब तक कि इसमें संतान का प्रवेश न हो जाए। ऐसा प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों में होता है। संतान के बिना समाज, देश या विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए संतान की प्राप्ति किसी भी दम्पति के लिए सबसे अधिक खुशी प्रदान करने वाली होती है। खासकर हिन्दू समाज में अपने संतान तथा पुत्र संतान को अधिक मान्यता प्राप्त है क्योंकि पुत्र संतान को वंश परम्परा को आगे बढ़ाने वाला, पित्तरों का तर्पण करने वाला, पिता की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा की शांति हेतु क्रिया–कर्म करने वाला आदि माना जाता है। परन्तु पुत्र अथवा पुत्री कोई भी संतान न होने की स्थिति में पुत्री संतान की भी उतनी ही तीव्र अभिलाषा लोगों में होने लगती है। चूंकि संतान सुख की इच्छा सभी को होती है, परन्तु इसकी प्राप्ति में बाधाओं का सामना भी करना पड़ता है। ज्योतिषशास्त्र में संतान सुख में आने वाली बाधाओं को ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव का कारण माना जाता है। पति अथवा पत्नी या दोनों की कुण्डलियों में यदि कोई ग्रह अशुभ व बाधक योग बनाता है तो उस दम्पति को संतान सुख प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान से संबंधित योग और उपाय

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही है। आप दुराचारी प्रवृत्तियों से मुक्त रहेंगे तथा आगे चलकर लोकप्रियता व प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पाचवें भाव के स्वामी का नवांशधिपति शुभ ग्रहों से युति अथवा दृष्टि संबंध स्थापित कर रहा है। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें एवं पहले भाव के स्वामी पुरुष राशि के ही नवांश में स्थित हैं। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पुरुष ग्रहों की दृष्टि पांचवें भाव पर पड़ रही है। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में स्त्री राशि एवं स्त्री राशि का नवांश पांचवें भाव में स्थित है। आपको पुत्री की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेश बलशाली नहीं है– उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं होने के कारण। इसके अतिरिक्त, यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। इस विशिष्ट योग को एक–पुत्र योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो आपको केवल एक संतान की प्राप्ति हो सकती है– जिसके पुत्र होने की संभावना अत्यधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की चतुर्थेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे मातृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र की पांचवें भाव में युति है। पांचवें भाव में कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही दृष्टि डाल रहा है। यह एक अनुकूल योग है, इसे अपत्य सुख योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आप योग्य संतानों की प्राप्ति के संदर्भ में विशेष रूप से भाग्यशाली होंगे– जो आपके परिवार के लिए सदैव गर्व व आनन्द का स्रोत बनेंगे।

आपकी कुण्डली में दामिनी योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक प्रशंसनीय ग्रह स्थिति है। आप बहुत समृद्ध होंगे, पूर्णतः सभ्य प्रकृति, धैर्यवान और बहुत विद्वान होंगे। आप उदार प्रवृति वाले होंगे तथा सदैव दूसरों के प्रति करूणा का भाव रखेंगे। आप जानवरों के प्रति दयालु होंगे एवं उनकी किसी प्रकार से सेवा भी करेंगे। आप पारम्परिक धार्मिक रीतियों का निर्वाहन करेंगे, सुखमय व शांतिपूर्ण वैवाहिक जीवन का आनन्द लेंगे तथा आपकी संतानें योग्य और कर्तव्यनिष्ठ होंगी। आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा जिस राशि में स्थित है उस राशि का स्वामी तीसरे भाव में स्थित है। आप अपने माता–पिता की इकलौती संतान हो सकते हैं अथवा यदि आपका कोई भाई या बहन होता भी है, तो उसकी आयु अधिक लम्बी नहीं हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि अष्टमेश आठवें भाव में स्थित है। आपको संतान की प्राप्ति होने की संभावना कम है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – पुजारियों

और साधुओं की सेवा करें। महागायत्री का पाठ करें।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश और पंचमेश परस्पर शत्रु हैं। आपके व आपके पिता के मध्य भी समान रूप से शत्रुता के भाव होंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – तोता पालें। मजदूरों का पैसा अपने पास न रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवे भाव का स्वामी किसी पापी ग्रह के साथ स्थित है। आपको संतान बाधा का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – रोटी पर सरसों का तेल लगाकर कौओं और कुत्तों को खिलायें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी किसी वक्री, अस्त अथवा नीच ग्रह के साथ स्थित है। आपको संतान सुख की प्राप्ति में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भाग–दौड़ वाले काम न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी अस्त, पापी अथवा नीच ग्रहों के साथ स्थित है एवं चंद्रमा केंद्र में स्थित है। आपको संतान बाधा योग का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – पीतल के बर्तन में गंगाजल डालकर घर में रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। आपको संतान बाधा का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – चाचा की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव पर मंगल या शुक्र की दृष्टि नहीं है। आपको संतान की प्राप्ति में कठिनाइयां हो सकती हैं या संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भाई की सेवा करें। आर्थिक सम्पन्नता के लिए अपने गुप्तांग दूध या दही से धोयें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें अथवा सातवें भाव में मन्दी उपग्रह द्वारा अधिष्ठित राशि उपस्थित है। आपको संतान की प्राप्ति में कठिनाइयां हो सकती हैं या संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है या संतान सुख से वंचित रहना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग के होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और राहु आपके चौथे भाव में स्थित हैं– जबकि इनमें से कोई भी उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अरिष्ट योग कहते हैं। आपके पिता को आपके जन्म के आस–पास किसी समय कष्ट सहन करना पड़ा होगा तथा उनका स्वास्थ्य व सुख आपके पारिवारिक सदस्यों की गंभीर चिन्ता का कारण बना होगा। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपके पिता की सोच उनके जीवनकाल में किसी समय कुछ–कुछ भ्रमित हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – बुरे धंधों से बचें। सरस्वती जी की पूजा अर्चना करें।

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान सुख प्राप्ति के सरल उपाय

(1) किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार के दिन एक वृद्ध ब्राह्मण को अपने घर पर बुलाकर उन्हें भोजन कराएं एव पीला वस्त्र, कुछ नगद राशि, एक कोई भी धार्मिक पुस्तक एवं एक केसर की डिब्बी उपहार में दें। ऐसा आपको एक वर्ष तक प्रत्येक प्रथम गुरुवार के दिन करना है।

(2) प्रतिदिन श्री राधा–कृष्ण, विष्णु–लक्ष्मी की विधिपूर्वक पूजा करें। इसके लिए शुक्ल पक्ष के रवि पुष्य और गुरु पुष्य सर्वोत्तम हैं। यह पूजा प्रारंभ करने के लिए 'देवकी सुतः गोविंदः वासुदेवः जगत्पते।

(3) संतान प्राप्ति के लिए पांच प्रकार के धातु से बने नाग नागीन के जोड़े को बहते जल में प्रवाहित कर दें।

(4) गऊशला के दान क्षेत्र में हर रोज लगातार 43 दिन तक दान करने से संतान की प्राप्ति जल्दी हो जाती है।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध

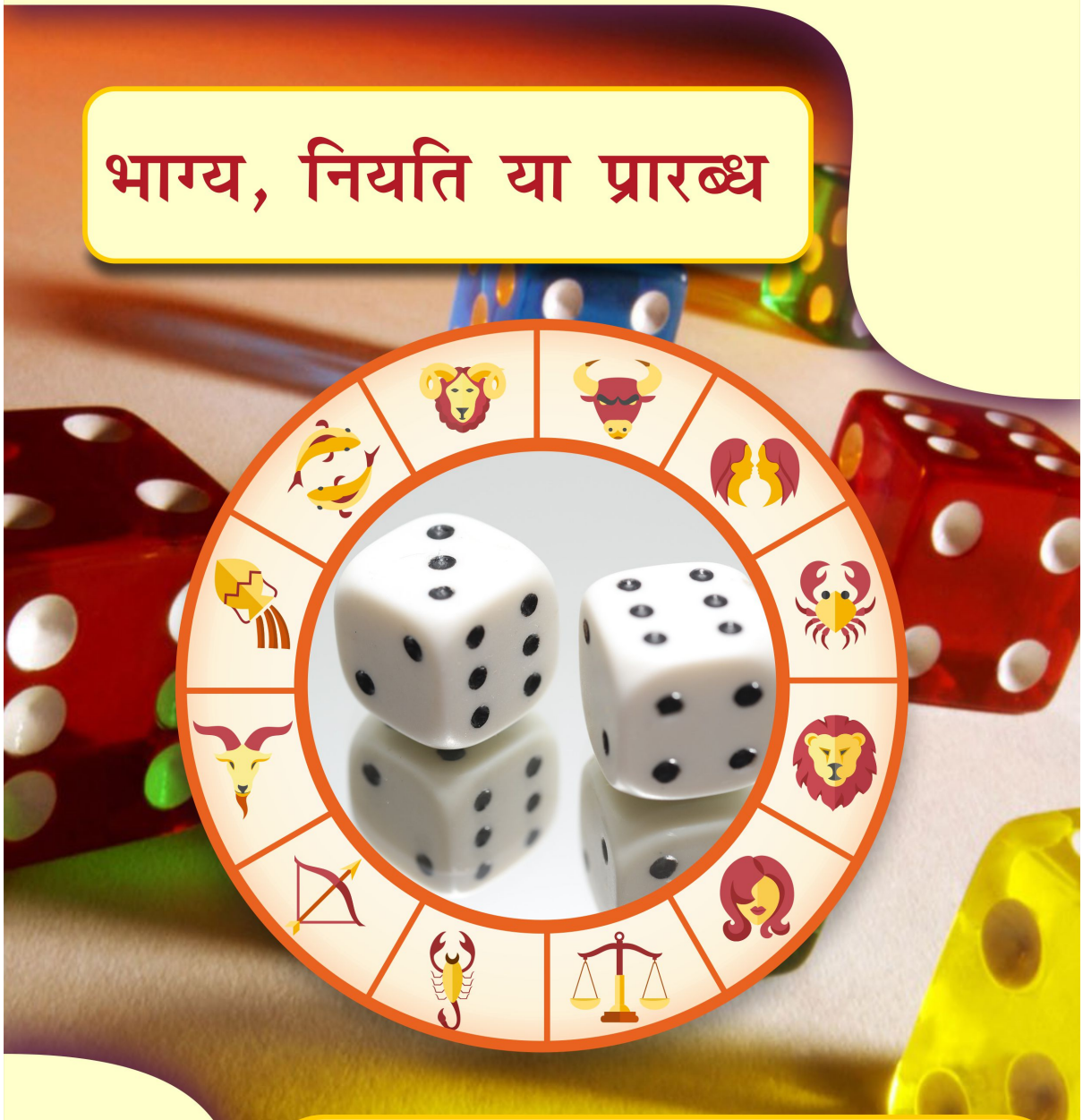

इस संसार में आस्तिक एवं नास्तिक दोनों की तरह के मनुष्य हैं। भले ही नास्तिक मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए उनके लिए भाग्य भी जीवन में कोई मायने नहीं रखता है, परन्तु चाहे अनचाहे ढंग से सबको इस सत्य को कभी न कभी स्वीकार करना पड़ता है कि ऐसी कोई शक्ति अवश्य है जो हमारे कर्मों के आधार पर हमारे भाग्य का निर्माण करती है। ऐसी धारणा है कि व्यक्ति के पूर्व जन्म में किए गए कर्मों का फल उसे अगले जन्म में प्राप्त होता है एवं इस कर्मों के फल को ही सामान्य शब्दों में भाग्य का लिखा माना जाता है जो कि व्यक्ति को वर्तमान में प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य का जीवन केवल भाग्य से ही प्रभावित नहीं होता अपितु उसे उसका कर्म भी उतना ही प्रभावित करता है अर्थात व्यक्ति के भाग्य का निर्माण उसके कर्मों के आधार पर ही होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हमारा भाग्य हमारे किए गए कर्मों से बनता है तो क्यों कोई व्यक्ति वर्तमान में इमानदारी, सच्चाई, परोपकार आदि सद्गुणों का अनुसरण करने के बाद भी जीवन में अनेक कठिनाईयों को झेलता है, जबकि दूसरा व्यक्ति कुमार्ग पर चलते हुए भी सुखी जीवन व्यतीत करता है। यदि ध्यान से देखा जाय तो यह ज्ञात होता है कि कुमार्ग पर चलकर अर्जित की हुई खुशियां अधिक समय तक नहीं टिकतीं हैं। जबकि व्यक्ति के सद्कर्म उसके भाग्य में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने में मदद करते हैं। यह विषय अत्यंत जटिल एवं तर्क योग्य है कि भाग्य श्रेष्ठ है या कर्म तथा भाग्य की वास्तविकता क्या है ? साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि जैसे ईश्वर सत्य है उसी प्रकार व्यक्ति का भाग्य भी उसके साथ होता है जो कि उसके कर्मों के आधार पर परिवर्तित होता रहता है।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित योग और उपाय

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश, नवमेश, चंद्रमा और बृहस्पति चारों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति शक्तिशाली राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव में शक्तिशाली ग्रह स्थित है। आपको अपने भाग्य का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी गुरु एवं शुक्र से युति अथवा दृष्टि सम्बन्ध स्थापित कर रहा है। आपको अपने भाग्य का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले एवं दूसरे भाव का स्वामी पांचवें भाव में उपस्थित हैं। आप भाग्यवान व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी केन्द्र, त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में उच्च राशि, मित्र राशि अथवा स्व राशि में उपस्थित है। आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की बृहस्पति के साथ युति है– जो कि एक अनुकूल स्थिति में है। एक शुभ योग का निर्माण हो रहा है। आप धन संबंधी मामलों में भाग्यशाली होंगे, अत्युत्तम आय होगी तथा निश्चित रूप से बहुत धनवान होंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह वेशि योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न कर रहा है। जैसा कि संबंधित ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है, अतः यह एक शुभ योग है। इस समग्र योग को शुभ–वेशि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप लम्बे कद और सम दृष्टि वाले होंगे। इसके अतिरिक्त, आप सत्यनिष्ठ और आशावादी दृष्टिकोण वाले होंगे। हालांकि, आप बहुत उर्जावान प्रवृत्ति के नहीं हो सकते हैं। यद्यपि आप बहुत धनी नहीं हो सकते हैं, फिर भी, आप अपने भाग्य से खुश रहेंगे तथा चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीचस्थ है तथा द्वादशेश चौथे भाव में बैठा हुआ है। आपका जीवन सार्थक नहीं हो सकता है, आप इर्ष्यालु प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा आपको दुखी व कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – कोई भी दान और उपहार न लें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी वक्री या नीच का है या त्रिक भाव में स्थित है। आपके भाग्य में बाधाएं अवश्य उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भैरों मंदिर में शराब का दान न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव में गुरु अपनी ही नीच राशि में स्थित है। आपको अपने भाग्य से किसी प्रकार

की कोई सहायता नहीं मिलेगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने घर में गेंदा या सूर्यमुखी का पौधा लगायें।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पर वक्री शनि की दृष्टि पड़ रही है। आपको अपने भाग्य का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – बुआ के लड़के की सेवा करें। जीव हत्या न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव के स्वामी के साथ गुरु अपनी नीच राशि में स्थित है। आपके भाग्य में बाधाएं आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने माता–पिता की मर्जी के बगैर विवाह न करें। पुजारियों और साधुओं की सेवा करें।

भाग्य बाधा दूर करने के लिए सरल उपाय

(1) किसी भी माह के चतुर्दशी के दिन एक जटा नारियल लेकर उसकी जटा हटा दें और उसे दो बराबर टुकड़ों में कटोरी नुमा आकार में तोड़ लें। उसके बाद एक टुकड़े में एक पान का पत्ता, पीली सरसों और चने व मूंग की दाल से भर दें। फिर उस पर थोड़ा सा सिंदूर छिड़क दें। अब दूसरे वाले नारियल के कटोरे में कपूर भर लें। फिर किसी सूनसान चौराहे पर जाकर दक्षिण दिशा की तरफ, पहले वाले टुकड़े अर्थात चने व मूंग की दाल से भरे टुकड़े को अपने ऊपर से सात बार उसारा करके वहीं छोड़ दें एवं दूसरे वाले टुकड़े में दीपक की तरह अग्नि जलाकर छोड़ दें। इसके बाद प्रणाम कर वापिस आ जाएं। किन्तु इस बात का ध्यान रखें कि आपको किसी भी हाल में पीछे मुड़कर नहीं देखना है। अपने घर में प्रवेश करने से पहले हाथ–पैर अवश्य धो लें।

(2) काली हल्दी मिल जाऐ तो घर में रख लें।

(3) प्रातः काल सर्वप्रथम झाड़ू लगायें, परन्तु शाम होने के बाद भूलकर भी झाड़ू न लगायें।

(4) रात्रि का भोजन बनाते समय जो अन्तिम रोटी बने उसे कुत्ते को डाल दें। यह प्रयास किया करें कि आपके पैरों से चीटियां अथवा अन्य छोटे छोटे कीट–पतंगे कुचले न जायें।

धन–संपत्ति

मनुष्य का जीवन मिलने के बाद उसकी आवश्यकताएं विभिन्न रूप धारण करके उसके समक्ष आ खड़ी होती हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकता जरूर पड़ती है। मनुष्य का वर्तमान हो अथवा भविष्य आर्थिक पक्ष से अधिक प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति का आर्थिक पक्ष सुदृढ़ है तो उसकी अनेक समस्याएं आसानी से दूर हो जाती हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं सबकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ही हो। किसी के पास अपार धन होता है तो कोई धन के अभाव में अपना जीवन बहुत ही कठिनाई में व्यतीत करता है। जीवन में धन से जुड़ी हुई बाधाएं अनेक रूप में आती हैं। यह आवश्यक नहीं कि जिसके पास धनार्जन के अच्छे साधन हो अथवा जिसका व्यापार व आय अधिक हो उसे धन का कभी अभाव नहीं होता, एवं जिसकी आय कम होती है उसे ही धन बाधा का सामना करना पड़ता है। धन संबंधी बाधा तो किसी के भी जीवन में किसी भी स्वरूप में आ सकती है। ऐसी परिस्थिति जब व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो और उसके पास प्रत्यक्ष रूप से धन उपलब्ध न हो तो उसे धन बाधा कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की परिस्थितियां ग्रहों के योग से निर्मित होती हैं। यही कारण है कि एक ही माता–पिता की दो संतान माता–पिता द्वारा समान रूप से धन वितरण करने के बाद भी कोई धनवान व कोई गरीब हो जाती है। इसलिए इन ग्रहों के योग को जानना व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।

धन – संपत्ति से संबंधित योग और उपाय

धन – संपत्ति से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति की चतुर्थेश के साथ युति है। आपको अपार धन–संपदा का सुख प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश, नवमेश और एकादशेश में से कोई एक चंद्रमा से केन्द्र भाव में स्थित है तथा उस पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही है। आप बहुत धनी व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश, द्वितीयेश और एकादशेश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। आपको उत्तम धन–संपत्ति का सुख प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश और चतुर्थेश की त्रिकोण में युति है। आप धनोपार्जन के लिए उचित साधनों का प्रयोग करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश, नवमेश, चंद्रमा और बृहस्पति चारों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति शक्तिशाली राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश व नवमेश एक साथ मित्र राशि में स्थित हैं तथा बृहस्पति अशुभ ग्रह से पीड़ित नहीं है। आपको अपार धन–संपदा की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की बृहस्पति के साथ युति है– जो कि एक अनुकूल स्थिति में है। एक शुभ योग का निर्माण हो रहा है। आप धन संबंधी मामलों में भाग्यशाली होंगे, अत्युत्तम आय होगी तथा निश्चित रूप से बहुत धनवान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश द्वितीयेश के साथ संबद्ध है (या इस पर उसकी दृष्टि है)– जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह किसी प्रकार से पीड़ित नहीं है। आप अपनी माता के संबंध में भाग्यशाली होंगे तथा उनसे आपको धन–सम्पदा की प्राप्ति होगी। आपको अपने संबंधियों तथा कृषि से भी लाभ मिलेगा।

जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक जल तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से उत्तर दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, जैसाकि ये दोनों ही

ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं, अतः यह योग बहुत शुभ होगा, क्योंकि सूर्य आपकी कुण्डली में शुभ–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी शुभ करतरी योग कहा जाता है। जैसाकि यह योग अनेक अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं का सूचक है, आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन में काफी कम आयु में ही एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे, जीवन की सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे तथा आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

धन – संपत्ति से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु एक अशुभ ग्रह के साथ चौथे भाव में स्थित है तथा उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। यह एक प्रतिकूल योग है। संभवतः आपका अपना कोई घर नहीं हो सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भैरों मंदिर में शराब का दान न करें। 400 ग्राम या एक किलो धनियां बहते पानी में सात बुधवार तक बहायें।

आपकी जन्मकुण्डली में, षष्ठेश एक अशुभ ग्रह के साथ स्थित है तथा द्वादशेश पर दृष्टि डाल रहा है। संभवतः आप अपने प्रारम्भिक जीवन में ही अपने पिता एवं धन–संपदा को खो सकते हैं तथा आपको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – चाचा की सेवा करें। लोहे अथवा लकड़ी की वस्तुओं का व्यापार न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु अपनी नीच राशि में स्थित है। आपको अपने जीवन में धन संबंधी बाधाओं को सदैव झेलना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – स्कूल अध्यापक की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में छठे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी के साथ पांचवें भाव के स्वामी की युति है एवं इन पर शुभ दृष्टि नहीं है। आपको अपना जीवन आर्थिक तंगी की स्थिति में गुजारना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवे भाव का स्वामी छठे या दसवें भाव में उपस्थित है एवं उस पर मारकेश अर्थात दूसरे या सातवें भाव के स्वामी की दृष्टि पड़ रही है अथवा छठे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी की दृष्टि पड़ रही है। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो सकती है।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, एक घोर अशुभ ग्रह आपके आठवें भाव में स्थित है– जो कि किसी शुभ ग्रह से प्रभावित नहीं है। यद्यपि आप काफी सम्पन्न होंगे, तो भी आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए एवं अनावश्यक रूप से अत्यधिक जोखिम नहीं उठाना चाहिए। आपको गम्भीर प्रकार की अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है। इस बात की भी संभावना है, कि आप किसी अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों को गंभीर चोट पहुंचा सकते हैं– जिसके लिए आपकी पेशी हो सकती है या दंडित तक किया जा सकता है।

धन बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) एक कलश को अपने चौकी के सामने स्थापित करके उसमें केसर, चावल, पूर्वा एवं पानी भरकर एक सिक्का डाले और उसके उपर स्वास्तिक चिन्ह बनाये। फिर इसके उपरान्त छोटी सी प्लेट में चावल भर कर कलश के मुख पर रख दें और श्री यंत्र स्थापित कर दें। अब इसके बाद आप दीपक जलायें, कुमकुम लगायें और अक्षत रख कर लक्ष्मी जी का स्मरण करते हुए श्रद्धा पूर्वक पूजा करें। इस उपाय के करने से घर में सुख समृद्धि की वृद्धि होती है।

(4) यदि अपनी निर्धनता दूर करना चाहते हैं, तो मां लक्ष्मी की प्रतिमा के सामने दीपक जला कर पूजा पाठ करें और इसके बाद इस मंत्र को 'ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्र सौः जगत्प्रसूत्यै नमः' दिन में 108 बार, लगातार 108 दिन तक जप करें। इस उपाय के करने से आपकी निर्धनता दिन दूर हो जायेगी और आर्थिक स्थिति बदल जायेगी।

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण

व्यक्ति किसी भी क्षेत्र चाहे सरकारी हो या गैर–सरकारी या व्यवसाय, वह अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करते हुए अपने विकास की तीव्र इच्छा रखता है। वह जीवन भर एक ही स्तर को नहीं जीना चाहता है बल्कि सदैव अपने स्तर से ऊपर उठना चाहता है। उसकी यही इच्छा उसके कार्यक्षेत्र में उन्नति पाने की इच्छा को तीव्र करती है। वह अपनी आय में, अपने लाभ में, अपनी शक्ति में वृद्धि चाहता है। कई बार वह अपनी पदोन्नति सिर्फ आय में वृद्धि के लिए ही नहीं बल्कि अपने शक्ति व प्रभाव में वृद्धि के लिए भी चाहता है। इसके लिए वह भरपूर प्रयत्न भी करता है, लेकिन उसके प्रयत्न का प्रतिफल उसके परिश्रम के अनुरूप ही प्राप्त हो यह सदैव और सभी के साथ संभव नहीं होता। कई बार किसी को बिना अधिक परिश्रम के ही आय में वृद्धि व पदोन्नति प्राप्त हो जाती है, परन्तु किसी किसी को कठिन परिश्रम के बाद भी प्राप्त नहीं होती। ज्योतिष की मानें तो यदि व्यक्ति इमानदारी से अपना कर्म करता है एवं अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करता है, परन्तु उसके बाद भी उसके जीवन में बार–बार इस प्रकार की कठिनाई अथवा बाधा का आती है तो यह उसके जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव से भी हो सकता है। ग्रहों की प्रतिकूलता व्यक्ति के उन्नति के मार्ग को बाधित करती हैं। इसलिए इसे जानना व्यक्ति के लिए आवश्यक है जिससे कि वह उचित मार्ग अपनाकर अपनी उन्नति में आने वाली बाधाओं को दूर कर सके।

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित योग और उपाय

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति द्वितीयेश के साथ शुभ भाव में स्थित है। आप सर्वोच्च पद व अधिकार का सुख प्राप्त करेंगे।

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य ग्रहण योग बना रहा है। आपको अपनी पदोन्नति में अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – खाकी रंग के धागे में ताँबे का सिक्का डालकर पहनें। घर की छत पर कोयला इत्यादि ईंधन न रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य राहु के साथ स्थित है एवं दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। आपको अपनी पदोन्नति के लिए अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – सरकारी कर्मचारियों से बैर न करें। झूठी गवाही न दें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है और वह उच्च या स्वराशि का नहीं है। आपको पदोन्नति प्राप्त करने के लिए अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – माँस–मदिरा का सेवन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि पहले, चौथे या आठवें भाव में स्थित नहीं है एवं उच्च का या स्वराशि का नहीं है। आपकी पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – जीव हत्या न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव में छठें, आठवें या बारहवें भाव का स्वामी स्थित है। आपको अपनी पदोन्नति के लिए अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में किसी भी त्रिक भाव अर्थात छठवें, आठवें या बारहवें भाव का स्वामी दसवें भाव अथवा दसवें भाव के स्वामी पर दृष्टि डाल रहा है। आपकी पदोन्नति के मार्ग में अनेक बाधाएं उत्पन्न होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव के स्वामी पर किसी पापी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है एवं छठवें, आठवें या बारहवें भाव का स्वामी सूर्य के साथ स्थित है। आपकी पदोन्नति के मार्ग में अधिक कठिनाईयां आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – नाक छेदवायें।

पदोन्नति बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) आपको पदोन्नति के लिए अपने दाएं हाथ में त्रिधातु का एक अभिमंत्रित कड़ा पहनना चाहिए। इससे भी आपके पदोन्नति के मार्ग में आने वाली बाधाएं दूर हो जाएंगी।

(2) पदोन्नति के मार्ग में आने वाली बाधा को समाप्त करने के लिए किसी भी माह के प्रथम बुधवार से प्रारम्भ कर सकते है। इसके लिए अपने घर के निकट स्थित किसी भी गणेश जी के मंदिर में जाकर अपनी शक्ति अनुसार पूजा व सेवा करें एवं मोदक का भोग आवश्यक तौर पर अर्पित करें। उसके बाद श्री गणेश अथर्वशीर्ष का एक बार पाठ करके उनकी सात बार परिक्रमा करें व 21 बार पंचाक्षरी मंत्र का जाप करें। अब प्रभु को प्रणाम कर

मंदिर से बाहर आ जाएं एवं गाय को हरी घास, चारा या कोई हरी सब्जी खिलाएं। इस उपाय के प्रभाव से आपके मार्ग में आने वाली बाधा दूर हो जाएगी।

(3) यदि पदोन्नति होते–होते अंतिम क्षण में किसी कारणवश रुक जाती है तो यह उपाय करना चाहिए। किसी भी माह के शनिवार के दिन दुकान से थोड़ी सी नागकेसर और गोरोचन ले आएं, परन्तु उसे घर में ना रखकर घर से बाहर ही किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। अब शनि के नक्षत्र अर्थात पुष्य, अनुराधा अथवा उत्तराभाद्रपद में एक पात्र में सरसों का तेल भर लें एवं उसमें थोड़ा काला तिल, एक कील, सवा रुपया एवं वो दोनों वस्तुएं नागकेसर व गोरोचन भी उसमें रख दें। अब आपने जिस शनि के नक्षत्र में ये सामग्री रखी हैं उससे अगले शनि के नक्षत्र में उस पात्र को सात बार अपने ऊपर से उसारें। फिर उस पात्र पर रोली से तिलक करें एवं धूप–दीप से आरती उतार कर उस पात्र को पीपल पर अर्पित कर दें। इस उपाय के उपरांत आपकी पदोन्नति की बाधा अवश्य समाप्त हो जाएगी।

कर्ज/अपव्यय और लोन आदि

मनुष्य के गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के साथ ही असीमित आवश्यकताएं उत्पन्न होने लगती हैं। वह अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छा करता है, परन्तु आर्थिक परिस्थितियां सदैव अनुकूल नहीं होतीं और वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय करने लगता है। उसे जिस प्रकार से उचित लगता है वह प्रयत्न करता है कि उसकी व उसके परिवार की सभी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाएं। इसी प्रयत्न में वह कई बार कर्जदार बनता चला जाता है। संभवतः कई बार जीवन में अकस्मात ऐसी परिस्थितियां भी उत्पन्न हो जाती हैं। जब व्यक्ति को ना चाहते हुए भी ऋण लेना पड़ता है। जीवन में ऋण लेना और उसे समय से चुका पाना कठिन कार्य होता है। कई बार स्थिति इतनी कष्टमय हो जाती है कि व्यक्ति का जीना दूर्भर हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में ऐसी परिस्थितियां ग्रहों के प्रभाव से उत्पन्न होती हैं। आर्थिक रूप से कर्जदार बनने की स्थिति में ज्योतिष में छठवें भाव व उसके स्वामी शनि को उसका कारण माना जाता है। ऐसी ही अनेक ग्रह स्थिति होती हैं जिसके कारण व्यक्ति को कर्ज लेना पड़ता है। इसे यदि पहले से जान लिया जाए तो कुछ हद तक परिस्थिति को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

कर्ज/अपव्यय और लोन से संबंधित योग और उपाय

कर्ज/अपव्यय और लोन से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में छठवें भाव का स्वामी अस्त, वक्री अथवा नीच का है। आपको कर्ज लेना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूसरों का सम्मान करें।

कर्ज/ऋण बाधा मुक्ति के सरल उपाय

(1) दो अभिमंत्रित गोमती चक्र, सफेद मिठाई, पीला चंदन, नारियल पानी, शुद्ध घी का दीपक, पीले फूल, शहद आदि एकत्र कर लें। किसी भी चतुर्दशी के दिन प्रातःकाल स्नान आदि करके श्वेत वस्त्र धारण करें और निकट के शिव मंदिर में जाकर शिवलिंग को नारियल पानी में शहद मिलाकर स्नान कराएं एवं पंचोपचार विधि से अभिषेक करें। पीले चंदन से त्रिपुण्ड बनाएं व तिलक करें। उसके बाद पीला फूल अर्पित करें व दीपक जलाएं। दो गोमती चक्र में से एक गोमती चक्र शिवजी को अर्पित कर दें तथा एक गोमती चक्र को शिवलिंग से स्पर्श कराकर सदैव अपने पास अपनी जेब में रखें। उसके बाद वहीं पर बैठकर दारिद्रदहन शिवस्तोत्र का पाठ करें। इस उपाय के प्रभाव से आप अपना कर्ज चुकाने में समर्थ होने लगेंगे और शीघ्र ऋणमुक्त हो जाएंगे।

(2) पांच गोमती चक्र और पांच लघु नारियल लें तथा किसी भी चतुर्थी तिथि के दिन प्रातःकाल में श्री गणेश जी का मन में ध्यान रखते हुए उनसे अपनी समस्या का समाधान करने के लिए प्रार्थना करें। अब एक हरे रंग के वस्त्र में एक गोमती चक्र, एक नारियल, एक बेसन का लड्डू तथा 21 हरी मूंग के दाने रखकर उसे बांध दें। किसी गणेश मंदिर में जाएं तथा उनकी मुर्ति के सामने धूप, अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक जलाएं व 11 मोदक का भोग लगाएं और फिर वहीं बैठकर श्री गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें। पाठ कर लेने के बाद उस पोटली को उनके चरणों में रखकर उनकी सात बार परिक्रमा करें और प्रणाम करके घर आ जाएं। इस प्रक्रिया को आप अगले पांच दिन तक नियमित रूप से रोज करें। छठवें दिन किसी पास के शिव जी के मंदिर में जाकर शिवलिंग को कच्चे दूध से स्नान कराएं और यथाशक्ति सेवा करें। माता पार्वती को भी एक पीली चुनरी अर्पित करें। इस उपाय से वांछित लाभ अवश्य मिलेगा।

(4) किसी भी महीने के शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार के दिन गेहूं के सवा किलो आटा में सवा किलो गुड़ मिलाकर उसके गुलगुले या पूएं बनाएं। शाम के समय हनुमान जी को चमेली के तेल में सिंदूर घोलकर अभिषेक करने के उपरांत घी का दीपक जलाएं और वहीं बैठकर हनुमान चालीसा के 7 पाठ करें। तत्पश्चात हनुमान जी को इन गुलगुले और पूएं का भोग लगाएं और गरीब व जरूरतमंद व्यक्तियों को बांट दें। ऐसा 11 मंगलवार करें, ऋण से छुटकारा मिलेगा।

शत्रु/कोर्ट कचहरी आदि

मनुष्य के जीवन में अन्य पहलुओं के अलावा एक और महत्वपूर्ण पहलु होता है वह है मित्र व शत्रु का। जहां व्यक्ति मित्रों व सहयोगियों के सहयोग से सफलता अर्जित करता है, वहीं शत्रु उसे सफलता के मुकाम से पिछे ढकेलने का भरपूर प्रयत्न करता है। मित्रों का चयन करना और मित्र बनाना जितना ही मुश्किल होता है, शत्रु बनाना उतना ही आसान अथवा इसे ऐसे भी कहा जा सकता है कि शत्रु बिना बनाए भी बन जाते हैं। शत्रु बनने में किसी एक कारण की भूमिका नहीं होती, अपितु अनेक कारण हो सकते हैं। आपकी सफलता, आपका योग्यता, आपका सम्मान, आपका धन, आपकी कर्मठता, लोगों में प्रतिस्पर्द्धा की भावना, आगे निकलने की होड़ आदि अनेक ऐसे कारण हैं जिससे अन्य लोगों को आपसे इर्ष्या होने लगती है। यही इर्ष्या व्यक्ति के लिए शत्रु पैदा करती है। आपके मित्र आपको समय पर सहायता पहुंचाएं या ना पहुंचाएं परन्तु आपके शत्रु समय पाते ही आपका अहित करने का पूरा प्रयास करते हैं। जीवन में शत्रुओं का सक्रिय होना अत्यंत समस्याएं उत्पन्न करता है। शत्रु का होना भी एक प्रकार का रोग होता है जो व्यक्ति को हानि अवश्य पहुंचाता है। ज्योतिष में हर उस कारक को शत्रु की संज्ञा दी गई है जो व्यक्ति को हानि पहुंचाता है अथवा हानि पहुचाने का प्रयास करता है। शत्रुओं का व्यक्ति के जीवन में सक्रिय होना ग्रहों की उपस्थिति से प्रभावित होता है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति अनेक शत्रुओं के होते हुए भी वह उनका दलन करते हुए सफलता अर्जित कर लेता है, जबकि अन्य को शत्रुओं के कारण जीवन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए ग्रहों के प्रभाव को जानना आवश्यक हो जाता है।

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित योग और उपाय

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध तीसरे भाव में स्थित है तथा बृहस्पति त्रिकोण में बैठा हुआ है। आप अत्यंत साहसी व्यक्ति होंगे।

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीचस्थ है तथा द्वादशेश चौथे भाव में बैठा हुआ है। आपका जीवन सार्थक नहीं हो सकता है, आप इर्ष्यालु प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा आपको दुखी व कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – चोटी रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपको अपने शत्रुओं के कारण हानि होगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – धार्मिक स्थान में चावल, गुड़ और चने की दाल दान करें।

शत्रु वर्ग से सुरक्षा के लिए सरल उपाय

(1) सूने कुएं पर मिट्टी के पके हुए दीपक, रात्रि के समय, 21 दिनों तक लगातार जलाने से शत्रु शमन होता है। दीपक जलाते समय, शत्रु का नाम ले कर, अपनी अभिलाषा को मन ही मन कहा जाए, तो वह अवश्य पूरी होती है। दीपक को साफ पानी से धो–पोंछ कर उपयोग करना चाहिए। सरसों का तेल और आक की रुई की बत्ती बना कर प्रयोग करना चाहिए। दीपक जलाने के बाद पलट कर न देखें। यदि अगले दिन कुएं पर दीपक गायब हो जाए, तो चिंतित नहीं होना चाहिए।

(2) गुंडों से तकलीफ होने पर महिलाएं अपने पर्स में 5 अशोक वृक्ष के पत्ते रखें। पत्तों को पहले पूजा में रखें, उनपर रोली का तिलक लगाएं। धूप–दीप दिखाएं और रामाय नमः कहते हुए, भगवान् के उस स्वरूप का ध्यान करें, जिसमें उन्होंने धनुष–वाण लिया हुआ है। भगवान् हमारी रक्षा करेंगे, ऐसा सोचते हुए पर्स में पत्ते रख लें। इन पत्तों को शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से रख सकते हैं। जब पत्ते सूख जाएं, चूरा हो जाएं, तो नवीन पत्ते रखें और पुराने पत्तों को, वृक्ष के नीचे, पवित्र स्थान पर रख दें।

(3) किसी प्रकार की विपत्ति आने का भय हो अथवा आपदाग्रस्त हो, मनोबल कमजोर हो गया हो, जीवन में बार–बार अशुभ घटनाओं के कारण मन दुखी रहता हो तो श्रद्धा विश्वासपूर्वक निम्न मंत्र का मानसिक जप अथवा लाल चंदन की माला से पांच माला नित्य जप करने से शीघ्र लाभ होता है।

मंत्र : करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राणिभिहन्तु चापदः।

(4) शत्रु ज्यादा परेशान करते हैं, तो आप उनका नाम कागज पर काजल से लिख कर उसे चाकू में लपेट दें और तकीये के नीचे रख कर सो जायें।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि

मनुष्य के मन में असीमित इच्छाएं होती हैं। वह संसार के समस्त भौतिक भोग विलास की वस्तुएं, धन–संपदा, सुख–समृद्धि इन सब को प्राप्त करना चाहता है एवं इन्हें प्राप्त करने के लिए आजीवन अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रयत्न भी करता है। इसके साथ–साथ उसकी एक और इच्छा भी होती है वह है समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान की प्राप्ति। वह चाहता है उसके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना हो, उसे सब लोग सम्मान दें, उसकी ख्याति दूर–दूर तक फैले इत्यादि। इतना ही नहीं वह अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए चाहता है कि उसके घर–परिवार के सदस्य भी ऐसा कोई कार्य न करें जिससे उसे अपयश मिले। यह सर्वथा सत्य है कि मनुष्य चाहे इस संसार में कितनी ही भौतिक संपदा एकत्र कर ले, परन्तु उसकी मृत्यु के उपरांत उसके साथ मात्र उसके अच्छे कर्म ही जाते हैं एवं इस भौतिक संसार में भी उसे उसके कर्मों के अनुसार ही आजीवन याद किया जाता है। व्यक्ति का एक गलत आचरण उसके जीवन के समस्त अच्छे कार्यों को अपयश में बदल देता है। इसलिए यश की कामना करने वाले व्यक्ति को सदैव अपने कार्यों का चयन बुद्धिमतापूर्ण ढंग से करना चाहिए। किन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि व्यक्ति को अपयश उसके या उसके पारिवारिक जनों के कार्यों के कारण नहीं मिलता अपितु अनचाहे, अनजाने अथवा विपरित परिस्थितियों के कारण मिल जाता है। ज्योतिषिय दृष्टि से इसमें व्यक्ति का दोष नहीं होता बल्कि उसके ग्रहों की प्रतिकूलता के कारण ऐसा होता है जो कि उसके भाग्य में सम्मिलित होने के कारण उसे उसका भुगतान करना पड़ता है। इस प्रकार की यश बाधाएं व्यक्ति को मानसिक रूप से बहुत पीड़ा देती हैं। इसलिए इन्हें जानकर इसके लिए उचित उपाय करना चाहिए।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित योग और उपाय

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित शुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध तीसरे भाव में स्थित है तथा बृहस्पति त्रिकोण में बैठा हुआ है। आप अत्यंत साहसी व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश, नवमेश, चंद्रमा और बृहस्पति चारों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति शक्तिशाली राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही है। आप दुराचारी प्रवृत्तियों से मुक्त रहेंगे तथा आगे चलकर लोकप्रियता व प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित अशुभ योग –

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीचस्थ है तथा द्वादशेश चौथे भाव में बैठा हुआ है। आपका जीवन सार्थक नहीं हो सकता है, आप इर्ष्यालु प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा आपको दुखी व कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपना चरित्र ठीक रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में, षष्ठेश की बारहवें भाव पर दृष्टि पड़ रही है। आप पापी प्रकृति के हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी अस्त अथवा अपनी नीच राशि में स्थित है। आपको ख्याति आसानी से प्राप्त नहीं होगी, इसमें आपको बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भतीजी की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव में सूर्य अपनी नीच राशि में स्थित है या राहु के साथ स्थित है। आपको अपने जीवन में यश प्राप्त करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – बन्दर को गुड़ खिलायें।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु मकर राशि में है और मकर राशि का स्वामी शनि दसवें भाव में स्थित है तथा सूर्य पर दृष्टि डाल रहा है। आपके जीवन में यश प्राप्ति में अवरोधों का सामना निश्चित रूप से करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – गणेश जी की पूजा करें।

यश बाधा दूर करने के लिए सरल उपाय

(1) किसी भी माह की पूर्णिमा की रात्रि में करना है। पूर्णिमा के दिन संध्या के समय स्नान आदि करके श्वेत वस्त्र धारण करें और अपने कार्यस्थल के पूजा के स्थान के पास गोबर से लीप कर उसपर अष्टदल बनाएं एवं उस पर एक बाजोट रखें। उस बाजोट पर केसर, पीला चंदन और हल्दी को मिलाकर एक चक्र बनाएं और उस चक्र के बीच में रोली से ऊँ का चिन्ह बनाएं। अब उस पर एक चांदी की डिब्बी रखें, जो कि गंगाजल से शुद्ध

की हुई हो। उस डिब्बी में सिंदूर के साथ सियारसिंगी, 21 लौंग, 5 हरी इलायची व 3 कर्पूर की टिक्की रखें तथा अलग से एक छोटा सा चांदी के पत्तर के साथ एक जटा नारियल, एक लघु नारियल और थोड़ी काली राई रखें। इसके बाद 'ऊँ नमो हरी वल्लभाय नमो नमः' मंत्र का हल्दी की माला पर 11 माला जाप करें और फिर प्रणाम कर उठ जाएं। अब उस चांदी की डिब्बी को किसी पीले रेशमी वस्त्र में बांधकर अपने कार्यक्षेत्र में किसी शुद्ध स्थान पर रख दें और चांदी की पत्तर को अपने मुख्यद्वार की चौखट के ऊपरी हिस्से में अन्दर की ओर दीवार में दबा दें। आपने जो लघु नारियल रखा था उसे एक पीले वस्त्र में थोड़े सुखे छुहारे के साथ बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें और जटा नारियल को एक पीले वस्त्र में लपेटकर या एक तांबे के लोटे की गर्दन पर सात बार कलावा लपेटकर उसमें गेहुं भरकर उसके ऊपर रख दें व नियमित रूप से अगरबत्ती करें। अब बची हुई काली राई को अपने ऊपर से उसार कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें। आपने जिस हल्दी व रोली का प्रयोग बाजोट पर किया था उसे किसी कागज में संभालकर समेट लें और उससे प्रतिदिन तिलक करें। इस उपाय के बाद आपको धन व यश दोनों की प्राप्ति होगी।

(2) किसी भी माह की शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को प्रारम्भ कर सकते हैं। इसके लिए आपको पांच अभिमंत्रित गोमती चक्र की आवश्यकता होगी। प्रथमा तिथि के दिन स्नान आदि के बाद गोमती चक्र लेकर उसे अपने घर के ही पूजास्थान पर माँ दुर्गा की तस्वीर के सामने लाल या हरे रंग के रेशमी वस्त्र पर स्थान दें। अब माँ दुर्गा को रोली आदि से तिलक कर नियमित रूप से पांच अगरबत्ती अर्पित करें एवं माँ दुर्गा का कोई भी पाठ करें। पाठ करने के बाद अगरबत्ती से बने भभूत से स्वयं का तिलक करें और सभी गोमती चक्रों पर भी तिलक करें। इस प्रक्रिया को नियमित रूप से पहली तिथि से नवमी तिथि तक करें। अब नवमी के दिन पाठ करने के बाद उन चक्रों में से एक को हरे वस्त्र में बांधकर अपने ऊपर से उसार कर किसी निर्जन स्थान पर जाकर दक्षिण दिशा में फेंक दें। उसके बाद बचे हुए चार चक्रों में से एक चक्र माँ के चरणों से स्पर्श करवा कर अपने गले में ताबीज का रूप देकर डाल लें अथवा गले में डालने की इच्छा न होने पर अंगुठी बनवा कर पहन लें। अन्य तीन बचे हुए गोमती चक्रों को स्वयं के किसी स्वच्छ पुराने वस्त्र में बांधकर अपनी आलमारी में रख दें। इस उपाय के बाद आपकी यश बाधा समाप्त हो जाएगी।

(3) प्रातः सो कर उठने के बाद नियमित अपनी हथेलियों को ध्यानपूर्वक देखना और इन्हें तीन बार चूमना सफलता प्राप्त करने के लिए एक अचूक और सफल टोटका है। इसको शनिवार से शुरू किया जाए, तो अच्छा है। इसको गुप्त ही रखें, वरना मनोवांछित फल मिलने में कठिनाई होगी।

ग्रह स्थिती वर्षफल

Varhphal Years: 47 (2020-2021) Varhphal Date: 18:12:2020, Time: 02:54Hrs

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	विशेष
लग्न	कन्या	21:41	हस्ता(4)	
सूर्य(ग्र.)	धनु	02:15	मूला (1)	**मित्र राशि**
चन्द्रमा	कन्या	16:00	हस्ता (2)	**स्व नक्षत्र**
मंगल	मेष	04:42	अश्विनी (2)	**स्व राशि**
बुध(अ.)	वृश्चिक	19:51	ज्येष्ठा (1)	**स्व नक्षत्र**
बृहस्पति	मकर	17:56	श्रवण (3)	**नीच राशि**
शुक्र	मकर	13:00	श्रवण (1)	**मित्र राशि**
शनि(व.)	मिथुन	08:12	अरिद्रा (1)	**मित्र राशि**
राहु(व.)	धनु	05:10	मूला (2)	**सम राशि**
केतु(व.)	मिथुन	05:10	मृगशिर (4)	**सम राशि**
हर्षल	तुला	03:20	चित्रा (4)	.....
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20	अनुराधा (4)	.....
प्लूटो	कन्या	13:11	हस्ता (1)	.....

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	विशेष
लग्न	तुला	06:39	हस्ता(4)	
सूर्य	धनु	02:15	मूला (1)	मित्र राशि
चन्द्रमा	मकर	14:20	श्रवण (2)	स्व राशि
मंगल	मीन	27:39	रेवती (4)	मित्र राशि
बुध(अ.)	धनु	01:00	मूला (1)	सम राशि
बृहस्पति	मकर	05:29	उत्तरा (3)	नीच राशि
शुक्र	वृश्चि	08:36	अनुराधा (2)	सम राशि
शनि	मकर	05:55	उत्तरा (3)	स्व राशि
राहु(व.)	वृष	25:27	मृगशिर (1)	उच्च राशि
केतु(व.)	वृश्चि	25:27	ज्येष्ठा (3)	उच्च राशि
हर्षल(व.)	मेष	12:53	अश्विनी (4)	....
नेपच्यून	कुंभ	24:07	पूर्वाभाद (2)	....
प्लूटो	धनु	29:35	उत्तरा (1)	....

लग्न कुण्डली

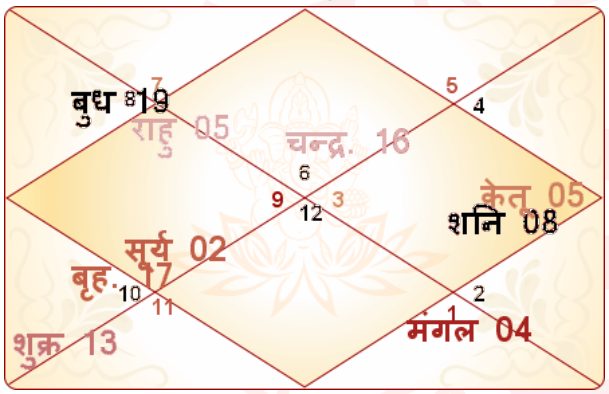

चन्द्र कुण्डली

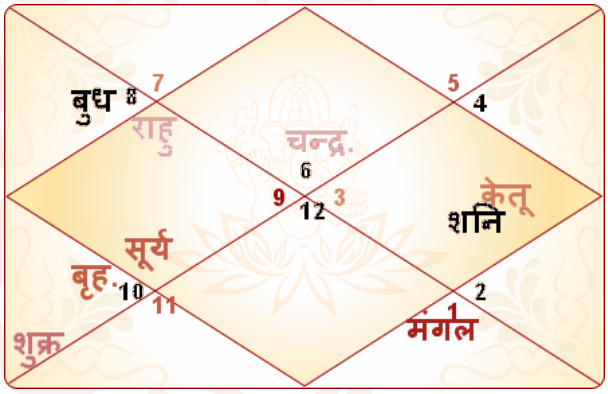

लग्न कुण्डली (वर्षफल)

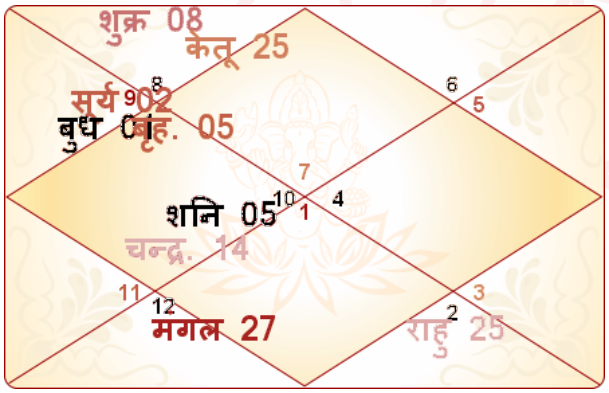

चन्द्र कुण्डली (वर्षफल)

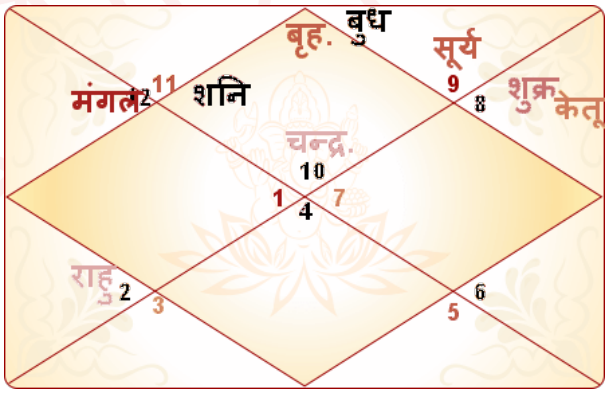

वर्ष (48) का विश्लेषण

वर्षफल 47 – 48 के लिए
वर्ष प्रवेश दिन – 18:12:2020

भुक्त आयु – 47 वर्ष , वर्तमान आयु – 48 वर्ष
वर्ष प्रवेश समय – 02:54:08

वर्षाधिकारी – शनि

स्वास्थ्य से संबंधित योग और उपाय

स्वास्थ्य सुख से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में पहले भाव में कोई शुभ राशि स्थित है एवं लग्न का नवांशेश जल राशि में स्थित है। इस वर्ष आपका शरीर स्वस्थ एवं बलिष्ठ होगा।

स्वास्थ्य सुख से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, द्वितीयेश व सप्तमेश पर शनि की अशुभ दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपको अनेक रोगादि के कारण मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – कौवों या भैंस को चावल और दूध खिलायें। अपने बहनोई की सेवा करें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में आठवें भाव में राहु स्थित है। इस वर्ष आपको उदर विकार से पीड़ित रहना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – यदि बुखार नहीं उतर रहा है, तो 800 ग्राम या 8 किलो जौ गोमुत्र में धोकर बहते पानी में बहायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में शनि एवं मंगल दोनों की दृष्टि पहले भाव पर पड़ रही है। इस वर्ष आप श्वांस से संबंधित रोग या क्षयरोग से पीड़ित हो सकते हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भाई की सेवा करें। हरे और काले कपड़े न पहनें।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित योग और उपाय

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। इस वर्ष आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चंद्रमा चतुर्थेश के साथ चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आप सर्वोच्च पद व अधिकार का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में दसवें भाव का स्वामी केंद्र अथवा त्रिकोण में स्थित है। इस वर्ष आपको राजपत्रित अधिकारी बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे एवं पांचवें भाव के स्वामी में राशि या नक्षत्र परिवर्तन हो रहा है अथवा दोनों पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, नौवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में एक साथ विद्यमान हैं। इस वर्ष आपको सुख, समृद्धि, धन, यश, ख्याति, भाग्य, लंबी आयु एवं सत्ता सुख प्राप्त होगा।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में दसवें भाव का स्वामी चर राशि में स्थित है। इस वर्ष आपकी नौकरी में बार–बार स्थानान्तरण होता रहेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूध का व्यापार नहीं करना चाहिए।

आपकी वार्षिक कुण्डली में दसवें भाव का स्वामी चर राशि में किसी पापी ग्रह के साथ स्थित है। इस वर्ष आपको स्थानांतरण के कारण आर्थिक हानि उठानी पड़ेगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूध का दान लाभदायक होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में सातवें भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है और सातवें भाव का स्वामी किसी अन्य अशुभ भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको अपने जीविकोपार्जन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपनी संतान को सोना न पहनायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में दूसरे भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है। इस वर्ष आपके जीवन में सदैव धनाभाव बना रहेगा।

विवाह से संबंधित योग और उपाय

विवाह से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, द्वितीयेश व सप्तमेश एक साथ मित्र राशि में स्थित हैं। इस वर्ष आपका विवाह होगा तथा दाम्पत्य जीवन सुखमय व्यतीत होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में पांचवें और सातवें भाव के स्वामी के मध्य दृष्टि संबंध है अथवा राशि परिवर्तन योग है। इस वर्ष आपके प्रेम विवाह की संभावना अधिक है।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गुरु अथवा शुक्र पर राहु अथवा केतु की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपके प्रेम विवाह करने की संभावना अधिक है।

विवाह से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में लग्न के स्वामी के साथ आठवें भाव का स्वामी या बारहवें भाव का स्वामी तथा कोई पापी ग्रह किसी भी भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपके विवाह में रूकावटें व बाधाएं आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दो किलो आलू हल्दी से पीला करके गाय को खिलायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गुरु अथवा सातवें भाव का स्वामी किसी त्रिक भाव अर्थात छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपका विवाह विलम्ब से होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हनुमान जी को सिन्दूर लगायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी दूसरे, छठवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके विवाह में अनेक बाधाएं आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भाई की सेवा करें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी किसी त्रिक भाव में स्थित है अथवा नीच या अस्त है। इस वर्ष आपके विवाह में अड़चनें आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – 6 कुआंरी कन्याओं को दूध पिलायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी अथवा शुक्र नीच नवांश में स्थित है। इस वर्ष आपका विवाह खूबसूरत कन्या से नहीं हो सकता है तथा साथ ही वे रोगग्रस्त, कटु वचन बोलने वाली एवं कर्कश स्वभाव की हो सकती हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – 6 कुआंरी कन्याओं को दूध पिलायें। दो किलो आलू हल्दी से पीला करके गाय को खिलायें।

दाम्पत्य सुख से संबंधित योग और उपाय

दाम्पत्य सुख से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चंद्रमा शक्तिशाली स्थिति में है तथा उसकी चतुर्थेश अथवा शुक्र के साथ युति है। इस वर्ष आपको स्वादिष्ट, पौष्टिक व राजसी पेय पदार्थों की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, द्वितीयेश व सप्तमेश एक साथ मित्र राशि में स्थित हैं। इस वर्ष आपका विवाह होगा तथा दाम्पत्य जीवन सुखमय व्यतीत होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे एवं पांचवें भाव के स्वामी में राशि या नक्षत्र परिवर्तन हो रहा है अथवा दोनों पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, नौवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में एक साथ विद्यमान हैं। इस वर्ष आपको सुख, समृद्धि, धन, यश, ख्याति, भाग्य, लंबी आयु एवं सत्ता सुख प्राप्त होगा।

दाम्पत्य सुख से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, सप्तमेश द्विस्वभाव राशि में स्थित है। इस वर्ष आपको विवाह की मर्यादा का पालन करना होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी छठे भाव में स्थित है अथवा छठवें भाव का स्वामी सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको वैवाहिक जीवन का सुख कम ही मिलेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हनुमान जी को सिन्दूर लगायें। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – खाने के बाद मेहमानों को मीठा खिलायें। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – खाने के बाद मेहमानों को मीठा खिलायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में पहले एवं छठे भाव का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त है। इस वर्ष आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चंद्रमा एवं शनि की युति है। इस वर्ष आपको एवं आपकी पत्नी दोनों को अपने चरित्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

मकान/आवास सुख से संबंधित योग और उपाय

मकान/आवास सुख से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चतुर्थेश जिस राशि में स्थित है उससे दसवीं राशि का स्वामी लग्नेश के साथ युत है। इस वर्ष आपको विशाल भूमि संपत्ति की प्राप्ति होगी एवं आप बहुत धैर्यशाली व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चंद्रमा शुक्र से तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको असीमित भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, बृहस्पति की सूर्य और/या चंद्रमा के साथ केन्द्र में युति है। इस वर्ष आपको असीमित

कृषि योग्य भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, नवमेश व एकादशेश तीसरे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आप बहुत विद्वान, सदाचारी व गुणवान व्यक्ति होंगे तथा आपको धन–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में शश नामक पंचमहापुरूष योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे एवं पांचवें भाव के स्वामी में राशि या नक्षत्र परिवर्तन हो रहा है अथवा दोनों पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, नौवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में एक साथ विद्यमान हैं। इस वर्ष आपको सुख, समृद्धि, धन, यश, ख्याति, भाग्य, लंबी आयु एवं सत्ता सुख प्राप्त होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में पहले, चौथे, सातवें या दसवें अर्थात केंद्र में गुरु के साथ चौथे भाव का स्वामी स्थित है। इस वर्ष आपको उत्तम आवास सुख की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी एवं दसवें भाव का स्वामी एक साथ स्थित हैं और शनि केंद्र में स्थित है। इस वर्ष आपको भव्य व कलात्मक भवन की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव में चर राशि है एवं चौथे भाव का स्वामी भी चर राशि में है। इस वर्ष आपको एक से अधिक भवनों का सुख प्राप्त होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी अपने ही भाव में स्थित है और उस पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही है अथवा युति है। इस वर्ष आपको उत्तम आवास सुख प्राप्त होगा।

मकान/आवास सुख से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, क्षीण चंद्रमा पर शक्तिशाली शनि और राहु की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो सकती है एवं आपका जीवन कष्टमय हो सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – घर की छत के नीचे कुआं या हैण्डपंप न रखें। सोते वक्त अपने तकिये के नीचे सौंफ रखें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव में किसी अशुभ भाव का स्वामी स्थित है। इस वर्ष आपके आवास सुख में कठिनाईयां आएंगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में आठवें भाव के स्वामी पर राहु की दृष्टि या युति है। इस वर्ष आपको अपने आवास सुख प्राप्ति में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दो किलो आलू हल्दी से पीला करके गाय को खिलायें। 4 किलों सिक्का और 8 नारियल बहते हुए पानी में बहायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में आठवें भाव में राहु स्थित है। इस वर्ष आपको आवास सुख प्राप्ति में बाधाएं आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – यदि घर के आस–पास भट्ठी (दाना भुनने वाली)

हो तो उसमें ताँबे का पैसा डालें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव में तीसरे भाव का स्वामी स्थित है। आपको आवास सुख में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। यदि अन्य ग्रहों के प्रभाव से आपको भवन सुख प्राप्त हो भी जाएगा तो आपको इस वर्ष किसी भी कारण से व्यर्थ के खर्चों से परेशान होना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूसरों के सामने अपने शरीर को खुला न रखें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव में तीसरे व छठवें भाव के स्वामी स्थित है अथवा बारहवें भाव में तीसरे, छठवें व चौथे भाव के स्वामी एक साथ स्थित हैं। ऐसे योग में यदि आपको अन्य ग्रहों के प्रभाव से भवन प्राप्त हो भी जाएगा तो भी इस वर्ष उसे शत्रु हड़प लेंगे।

वाहन/सवारी सुख से संबंधित योग और उपाय

वाहन/सवारी सुख से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है एवं राहु शुक्र से केन्द्र में स्थित है। इस वर्ष आपको धन–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चतुर्थेश जिस राशि में स्थित है उससे दसवीं राशि का स्वामी लग्नेश के साथ युत है। इस वर्ष आपको विशाल भूमि संपत्ति की प्राप्ति होगी एवं आप बहुत धैर्यशाली व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चंद्रमा शुक्र से तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको असीमित भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, बृहस्पति की सूर्य और/या चंद्रमा के साथ केन्द्र में युति है। इस वर्ष आपको असीमित कृषि योग्य भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, नवमेश व एकादशेश तीसरे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आप बहुत विद्वान, सदाचारी व गुणवान व्यक्ति होंगे तथा आपको धन–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में शश नामक पंचमहापुरूष योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे एवं पांचवें भाव के स्वामी में राशि या नक्षत्र परिवर्तन हो रहा है अथवा दोनों पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, नौवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में एक साथ विद्यमान हैं। इस वर्ष आपको सुख, समृद्धि, धन, यश, ख्याति, भाग्य, लंबी आयु एवं सत्ता सुख प्राप्त होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव में कोई शुभ ग्रह स्थित है तथा शुक्र चंद्र से तीसरे भाव में स्थित है अथवा चंद्र से शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको वाहन सुख प्राप्त होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी गुरु, शुक्र या चंद्र के साथ केंद्र या त्रिकोण में स्थित है। इस वर्ष आपको अनेक वाहनों का सुख अपने जीवन में प्राप्त होगा।

वाहन/सवारी सुख से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव में कोई अस्त, वक्री अथवा नीच का ग्रह स्थित है जिससे चौथा भाव दूषित हो गया है। इस वर्ष आपको वाहन सुख प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी छठवें भाव में स्थित है एवं साथ में शुक्र नहीं है। इस वर्ष आपके वाहन सुख में बाधाएं उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने बहनोई की सेवा करें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी किसी अस्त या नीच के ग्रह के साथ स्थित है। इस वर्ष आपके आय में कमी आएगी जिसके परिणामस्वरूप आपके वाहन सुख में भी बाधा आएगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – शुभ सोचें।

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान से संबंधित योग और उपाय

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, नवमेश और एकादशेश तीसरे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपके भाई बहुत आज्ञाकारी होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, पंचमेश अपने नवांश में स्थित है। इस वर्ष आपको एक पुत्र संतान की प्राप्ति होगी, जो कि दीर्घायु होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गुरु का नवांशधिपति केंद्र में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में पाचवें भाव के स्वामी का नवांशधिपति शुभ ग्रहों से युति अथवा दृष्टि संबंध स्थापित कर रहा है। इस वर्ष आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी स्त्री ग्रहों के साथ उपस्थित है। इस वर्ष आपको पुत्री की प्राप्ति होगी।

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी किसी वक्री, अस्त अथवा नीच ग्रह के साथ स्थित है। इस वर्ष आपको संतान सुख की प्राप्ति में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – साँप को दूध पिलायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी अस्त, पापी अथवा नीच ग्रहों के साथ स्थित है एवं चंद्रमा केंद्र में स्थित है। इस वर्ष आपको संतान बाधा योग का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने से नीच लोगों की सहायता करें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में पांचवें भाव पर मंगल या शुक्र की दृष्टि नहीं है। इस वर्ष आपको संतान की प्राप्ति में कठिनाइयां हो सकती हैं या संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने बहनोई की सेवा करें। आलू, दही, घी का दान करना आपके लिए शुभ रहेगा।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित योग और उपाय

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। इस वर्ष आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में तीसरे भाव में शक्तिशाली ग्रह स्थित है। इस वर्ष आपको अपने भाग्य का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में शश नामक पंचमहापुरूष योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, क्षीण चंद्रमा पर शक्तिशाली शनि और राहु की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो सकती है एवं आपका जीवन कष्टमय हो सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूध का व्यापार नहीं करना चाहिए। यदि घर के आस–पास भट्ठी (दाना भुनने वाली) हो तो उसमें ताँबे का पैसा डालें।

धन – संपत्ति से संबंधित योग और उपाय

धन – संपत्ति से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, पंचमेश शक्तिशाली स्थिति में है अथवा बृहस्पति से दूसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे एवं धन–संपदा से परिपूर्ण होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, बृहस्पति की चतुर्थेश के साथ युति है। इस वर्ष आपको अपार धन–संपदा का सुख प्राप्त होगा।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, बृहस्पति सूर्य या चंद्रमा के साथ केन्द्र या त्रिकोण में स्थित है। इस वर्ष आपको धन–समृद्धि, यश व ख्याति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। इस वर्ष आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है एवं राहु शुक्र से केन्द्र में स्थित है। इस वर्ष आपको धन–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चतुर्थेश जिस राशि में स्थित है उससे दसवीं राशि का स्वामी लग्नेश के साथ युत है। इस वर्ष आपको विशाल भूमि संपत्ति की प्राप्ति होगी एवं आप बहुत धैर्यशाली व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चंद्रमा शुक्र से तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको असीमित भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, बृहस्पति की सूर्य और/या चंद्रमा के साथ केन्द्र में युति है। इस वर्ष आपको असीमित कृषि योग्य भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, नवमेश व एकादशेश तीसरे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आप बहुत विद्वान, सदाचारी व गुणवान व्यक्ति होंगे तथा आपको धन–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में शश नामक पंचमहापुरूष योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे एवं पांचवें भाव के स्वामी में राशि या नक्षत्र परिवर्तन हो रहा है अथवा दोनों पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, नौवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में एक साथ विद्यमान हैं। इस वर्ष आपको सुख, समृद्धि, धन, यश, ख्याति, भाग्य, लंबी आयु एवं सत्ता सुख प्राप्त होगा।

धन – संपत्ति से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी त्रिक भाव में स्थित है परन्तु नीच का नहीं है। इस वर्ष आपको आर्थिक परेशानियों से जूझना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – चाँदी या चावल का दान करें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव में तीसरे भाव का स्वामी स्थित है। आपको आवास सुख में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। यदि अन्य ग्रहों के प्रभाव से आपको भवन सुख प्राप्त हो भी जाएगा तो आपको इस वर्ष किसी भी कारण से व्यर्थ के खर्चों से परेशान होना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – बड़ों की सेवा करनी चाहिए।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे भाव में तीसरे व छठवें भाव के स्वामी स्थित है अथवा बारहवें भाव में तीसरे, छठवें व चौथे भाव के स्वामी एक साथ स्थित हैं। ऐसे योग में यदि आपको अन्य ग्रहों के प्रभाव से भवन प्राप्त हो भी जाएगा तो भी इस वर्ष उसे शत्रु हड़प लेंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गुरु अपनी नीच राशि में स्थित है। इस वर्ष आपको धन संबंधी बाधाओं को सदैव झेलना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूसरों के सामने नहीं नहायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में दूसरे या ग्यारहवें भाव का स्वामी छठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके जीवन में शत्रुओं के सक्रिय होने से धन हानि होने की संभावना अधिक है।

आपकी वार्षिक कुण्डली में छठवें, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी के साथ पहले भाव के स्वामी की युति है एवं इन पर पाप ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – आपको अतिथियों की सेवा करनी चाहिए।

आपकी वार्षिक कुण्डली में छठे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी के साथ पांचवें भाव के स्वामी की युति है एवं इन पर शुभ दृष्टि नहीं है। इस वर्ष आपको आर्थिक तंगी की स्थिति में गुजारना पड़ सकता है।

आपकी वार्षिक कुण्डली में लग्नेश या लग्न नवांशेश त्रिक भाव अर्थात छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है एवं दूसरे या सातवें भाव के स्वामी से युक्त अथवा दृष्ट है। इस वर्ष आर्थिक दृष्टि से आपका जीवन उत्तम नहीं हो

सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – आपको अतिथियों की सेवा करनी चाहिए।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चंद्र से आठवें, लग्न से दसवें और सूर्य से ग्यारहवें भाव में कोई ग्रह उपस्थित नहीं है। इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति काफी कमजोर हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हरिवंश पुराण की कथा कहें या सुनें। शिवजी की पूजा करें।

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित योग और उपाय

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चंद्रमा चतुर्थेश के साथ चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आप सर्वोच्च पद व अधिकार का सुख प्राप्त करेंगे।

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में दसवें भाव पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपको पदोन्नति के लिए बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – तेल, उड़द और काले कपड़े का दान करें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में शनि दसवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इस वर्ष आपकी पदोन्नति के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हरे और काले कपड़े न पहनें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में किसी भी त्रिक भाव अर्थात छठवें, आठवें या बारहवें भाव का स्वामी दसवें भाव अथवा दसवें भाव के स्वामी पर दृष्टि डाल रहा है। इस वर्ष आपकी पदोन्नति के मार्ग में अनेक बाधाएं उत्पन्न होंगी।

कर्ज/अपव्यय और लोन से संबंधित योग और उपाय

कर्ज/अपव्यय और लोन से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में छठे भाव में दूसरे भाव का स्वामी विराजमान है। इस वर्ष आपको कर्ज लेना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भाई की सेवा करें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में छठवें भाव का स्वामी अस्त, वक्री अथवा नीच का है। इस वर्ष आपको कर्ज लेना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – घर की दीवार पर पीला पेंट लगायें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में शनि की दृष्टि छठे भाव पर पड़ रही है। इस वर्ष आप कर्जदार बनेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – बहते हुए पानी में शराब बहायें।

कर्ज/अपव्यय और लोन से संबंधित योग और उपाय

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में दूसरे या ग्यारहवें भाव का स्वामी छठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपके जीवन में शत्रुओं के सक्रिय होने से धन हानि होने की संभावना अधिक है।

आपकी वार्षिक कुण्डली में शनि छठवें भाव या छठवें भाव के स्वामी से स्थित है। इस वर्ष आपके शत्रुओं की

संख्या अधिक होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हरे और काले कपड़े न पहनें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में सूर्य छठवें अथवा बारहवें भाव के स्वामी के साथ विराजमान है। इस वर्ष आपके गुप्त शत्रुओं की संख्या अधिक होगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने भतीजे की सहायता करें।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित योग और उपाय

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित शुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, बृहस्पति सूर्य या चंद्रमा के साथ केन्द्र या त्रिकोण में स्थित है। इस वर्ष आपको धन–समृद्धि, यश व ख्याति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। इस वर्ष आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, चतुर्थेश जिस राशि में स्थित है उससे दसवीं राशि का स्वामी लग्नेश के साथ युत है। इस वर्ष आपको विशाल भूमि संपत्ति की प्राप्ति होगी एवं आप बहुत धैर्यशाली व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, नवमेश व एकादशेश तीसरे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आप बहुत विद्वान, सदाचारी व गुणवान व्यक्ति होंगे तथा आपको धन–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी वार्षिक कुण्डली में शश नामक पंचमहापुरूष योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस वर्ष आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी वार्षिक कुण्डली में चौथे एवं पांचवें भाव के स्वामी में राशि या नक्षत्र परिवर्तन हो रहा है अथवा दोनों पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, नौवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में एक साथ विद्यमान हैं। इस वर्ष आपको सुख, समृद्धि, धन, यश, ख्याति, भाग्य, लंबी आयु एवं सत्ता सुख प्राप्त होगा।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित अशुभ योग –

आपकी वार्षिक कुण्डली में, क्षीण चंद्रमा पर शक्तिशाली शनि और राहु की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो सकती है एवं आपका जीवन कष्टमय हो सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – गंगा स्नान करें। 43 दिन तक 8 बादाम मंदिर में चढ़ायें और उसमें से 4 बादाम अपने पास रख लें और 43 दिन के बाद उन्हें तेज बहते हुए पानी में बहा दें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में, षष्ठेश की बारहवें भाव पर दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आप पापी प्रकृति के हो सकते हैं।

आपकी वार्षिक कुण्डली में लग्न के स्वामी पर किसी पापी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है और दसवें भाव का स्वामी किसी नीच ग्रह के साथ स्थित है। इस वर्ष आपके यश प्राप्ति के मार्ग में अनेक अवरोध उत्पन्न होंगे। उपरोक्त

अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – आपको अतिथियों की सेवा करनी चाहिए।

आपकी वार्षिक कुण्डली में दसवें भाव का स्वामी किसी नीच ग्रह के साथ स्थित है। इस वर्ष आपको यश प्राप्त करने में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – गंगा स्नान करें।

आपकी वार्षिक कुण्डली में गुरु केंद्र भाव में अपनी नीच राशि में स्थित है। इस वर्ष यश बाधाएं अवश्य आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूसरों के सामने नहीं नहायें।